स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आरईसी की हिंदी पत्रिका
• अंक: 6 • वर्ष: 4

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

ऊर्जायन

50 वर्ष
1969-2019

गौरवमयी अतीत, उज्ज्वल भविष्य

आर ई सी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम)
(पूर्व में रूरल इलेक्ट्रीफिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड)

'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' --- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

ऊर्जायन
(आरईसी की हिंदी पत्रिका)

वर्ष : 4, अंक : 6

2019

- **मुख्य संरक्षक**
  श्री अजीत कुमार अग्रवाल
  अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
- **संरक्षक मंडल**
  श्री संजीव कुमार गुप्ता
  निदेशक (तकनीकी)
  सुश्री कल्पना कौल
  कार्यकारी निदेशक
  (मानव संसाधन)
  श्री सौरभ रस्तोगी
  महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
- **प्रधान संपादक**
  श्री के. के. पाण्डेय
  अपर महाप्रबंधक
  (मा.सं./रा.भा.)
- **संपादक**
  श्री व्योमकेश शर्मा
  वरिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा)
- **संपादन सहयोग**
  श्री शम्भूनाथ मौर्य
  कार्यपालक (राजभाषा)
- **विशेष सहयोग**
  आरईसी डिजाइन स्टूडियो
  सुश्री रजनी सिंह,
  तदर्थ कार्यपालक
  सहायक (राजभाषा)

'ऊर्जायन' में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि आरईसी की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए आरईसी अथवा संपादन टीम किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

पत्र व्यवहार का पता :
संपादक, ऊर्जायन, आरईसी राजभाषा, कोर-5, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली - 110003
ईमेल : recrajbhasha@gmail.com

विषय सूची

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश
- निदेशक (तकनीकी) का संदेश
- मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश
- महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश
- प्रधान संपादक की कलम से
- चिंतन एवं साहित्य–सृजन
  - जम्मू और कश्मीर 1947 से 2019 तक: काश... पूछो कि मुद्दा क्या है? (व्योमकेश शर्मा) 7–11
  - स्वर्णिम विहान– आरईसी के 50 वर्ष (अवनीश भारती) 11
  - कभी अभावों में खुशियां थी अब खुशियों का अभाव है: कुछ प्रसंग (कुंदन लाल) 12–13
  - एकनाथ रानाडे– एक समर्पित जीवन की कहानी (असीम गुप्ता) 14–15
  - पुस्तकालय में आपके नए मित्र (मनोहर गोयनका) 16–17
  - चंद्रयान–2 की कहानी (सिमरदीप सिंह) 18–19
  - धारा 370 हटने के बाद मेरी कश्मीर यात्रा (देवेन्द्र कपूर) 20–21
  - इलेक्ट्रिक वाहनः चुनौतियां और अवसर (मोनिका प्रियदर्शिनी) 22–23
  - भारतीय सिनेमा के सौ साल (तन्वी सिंघल) 24–25
  - मध्यवर्गीय परिवार के सपने (संतोष कलिहारी) 26–27
  - Plastic – a threat to generations (दिनेश गर्ग) 28–29
- राजभाषा गतिविधियां 30–31
- मानव संसाधन गतिविधियां 34–40
- कार्यक्षेत्र एवं उपलब्धियां 41–42

हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील

प्रिय सहकर्मियों!

आजादी के बाद संविधान सभा द्वारा हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा देते हुए 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। हिंदी भाषा को यह स्थान इसीलिए दिया गया क्योंकि यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती थी तथा स्वाधीनता संग्राम के दौर में यह पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती थी। इसीलिए राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के अन्य नेताओं ने लोगों तक अपने विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए हिंदी को विचार–विनिमय का माध्यम बनाया। विभिन्न भाषाओं वाले हमारे देश में हिंदी ने अलग–अलग भाषा बोलने वाले लोगों को आपस में जोड़ते हुए उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।

हमारी कंपनी ने 25 जुलाई, 2019 को अपनी स्थापना का 50 वर्ष पूरा किया है और देश के सभी गांवों और लाखों घरों के विद्युतीकरण द्वारा राष्ट्र की सेवा का एक लंबा सफर तय किया है। पिछले पांच दशकों में, हमारी कंपनी ने पूरे देश में जेनरेशन, ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन प्रोजेक्ट्स की फाइनेंसिंग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अब कंपनी का फोकस नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं की फाइनेंसिंग पर है।

विद्युत मंत्रालय के विभिन्न फ्लैगशिप कार्यक्रमों में भी कंपनी द्वारा सहयोग किया गया है जिसमें प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना– 'सौभाग्य' सबसे अधिक उल्लेखनीय है। सौभाग्य के माध्यम से पहली बार देश के लाखों घरों में बिजली आई है। मुझे पूरा भरोसा है कि जिस प्रकार देश के विद्युतीकरण द्वारा हमने राष्ट्र के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है उसी प्रकार हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी अपना पूरा सहयोग देंगे।

सभी कार्मिकों से मेरा आग्रह है कि वे अपने काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और हिंदी बोलते या लिखते समय इसमें स्थानीय भारतीय भाषाओं के शब्दों को भी प्रचलन में लाएं क्योंकि अपने देश की सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों के अपने विशेष सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ हैं। इससे हिंदी की लोकप्रियता और मान्यता और बढ़ेगी। हिंदी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने से हमारी एकता और अखंडता और अधिक सुदृढ़ होगी।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अजीत अग्रवाल

नई दिल्ली
सितंबर 2019

अजीत कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (तकनीकी) का संदेश

विद्युत क्षेत्र में मौजूद कारोबार से जुड़ी वर्तमान ढांचागत चुनौतियों के बावजूद हमारी कंपनी का उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी है। यह उपलब्धि इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी वर्ष कंपनी ने अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूरे किए हैं।

बिजली के उत्पादन, ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन से जुड़ी परियोजनाओं के वित्तपोषण में हमारी कंपनी की भूमिका अग्रणी रही है। ऊर्जा क्षेत्र के भविष्य को देखते हुए आने वाले समय में हमारी कंपनी का जोर नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण पर रहेगा। कारोबार के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ–साथ देश के सभी गाँवों और घरों को रौशन करने में भी आरईसी का अमूल्य योगदान रहा है। 'सौभाग्य' योजना के माध्यम से पहली बार देश के लाखों घरों तक बिजली की सुविधा पहुंची है जिससे अब देश के पर्वतीय, दुर्गम और दूर–दराज के क्षेत्र भी उन्नति और समृद्धि की डोर से जुड़ गए हैं।

हिंदी देश के जन–जन की भाषा है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ने का ऐतिहासिक काम किया है। कारोबार के साथ ही हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति और प्रोत्साहन योजनाओं को आरईसी के सभी कार्यालयों में पूरी तत्परता के साथ लागू किया जाता है।

यह मेरे लिए हर्ष का विषय है कि हमारी कंपनी द्वारा हिंदी पत्रिका 'ऊर्जायन' का प्रकाशन किया जा रहा है। कंपनी के सभी कार्मिकों से मेरा आग्रह है कि वे इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना रचनात्मक सहयोग दें और कार्यालय का अधिक से अधिक काम हिंदी में करें।

पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल होगी, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

संजीव कुमार गुप्ता
निदेशक (तकनीकी)

मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश

शब्द भंडार और व्याकरण के दृष्टिकोण से हिंदी एक समृद्ध भाषा है। हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारे देश के अलग–अलग प्रदेशों में इसके अनेक रूप देखने को मिलते हैं। बंगाल, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर के राज्यों के लोगों ने अपनी–अपनी स्थानीय भाषा के अनुसार हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाया है।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारी कंपनी की हिंदी पत्रिका 'ऊर्जायन' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाएँ किसी भी संगठन का आईना होती हैं और मेरा यह मानना है कि हर व्यक्ति में किसी न किसी रूप में रचनात्मक कौशल निहित होता है। अतः सभी कार्मिकों से मेरा आग्रह है कि वे अपनी–अपनी रुचि के विषय पर हिंदी भाषा में मूल रूप से लेखन का प्रयास करें और पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दें क्योंकि पत्रिकाओं का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से ही सफल होता है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों और संपादक मण्डल को मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

सुनीता सिंह
मुख्य सतर्कता अधिकारी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

ऊर्जायन पत्रिका के नए अंक के माध्यम से निगम के पचास वर्ष पूरा होने पर मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को कंपनी के स्वर्ण जयंती वर्ष की शुभकामनाएँ देता हूँ और इनके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ। मैं यह आशा करता हूँ कि हम सभी आगे भी निगम के उज्ज्वल भविष्य के प्रति संकल्पित होंगे ताकि निगम निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सके। निगम में विभिन्न आयोजनों के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है और संघ की राजभाषा नीति और अन्य दायित्वों का नियमित अनुपालन हो रहा है।

हिंदी पत्रिका का प्रकाशन भी इन्हीं दायित्वों में से एक है। पत्रिका में निगम के कार्मिकों की रचनाएँ निरंतर प्रकाशित की जा रही हैं जिससे उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का एक माध्यम मिला है। इस पत्रिका में अपने विचार और लेख आदि के माध्यम से योगदान देने के लिए मैं निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन की सफलता हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

सौरभ रस्तोगी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

प्रधान संपादक की कलम से

किसी भी संस्थान में पत्रिका के प्रकाशन का विशेष महत्व होता है। पत्रिकाएँ कार्यालयों का मुखपत्र होती हैं। इसके माध्यम से किसी भी कार्यालय द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का विवरण एक साथ मिल जाता है।

कार्मिकों को भविष्य में आने वाली चुनौतियों और अवसरों के अनुरूप तैयार करने के लिए कंपनी में पिछले एक वर्ष के दौरान व्यापक स्तर पर मानव संसाधन प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियां आयोजित की गई हैं। कार्मिकों के स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल के लिए विभिन्न चिकित्सा शिविर और योग से जुड़े अभ्यास सत्रों का आयोजन भी किया गया जिसमें महिला कार्मिकों के लिए विशेष चिकित्सा और योग सत्र शामिल थे।

निगम में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए हर स्तर पर प्रभावी कदम उठाए जाते हैं। वर्ष के दौरान कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है और इस वर्ष तिरुवनंतपुरम में दो दिवसीय विशेष राजभाषा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। इस पत्रिका द्वारा हमारा उद्देश्य निगम में एक रचनात्मक माहौल विकसित करने का रहा है और मुझे प्रसन्नता है कि पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल रही है। पत्रिका के प्रकाशन की सफलता पाठकों पर निर्भर करती है और इस संबंध में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

धन्यवाद सहित।

के.के. पाण्डेय
अपर महाप्रबंधक (मा.सं./रा.भा.)

जम्मू और कश्मीर 1947 से 2019 तक: काश... पूछो कि मुद्दा क्या है?

(संपादकीय हस्तक्षेप)

आजादी के समय कश्मीर का मसला मूल रूप से देशी रियासतों के एकीकरण का था। जब पूरे घटनाक्रम को एक क्रम में रखकर देखते और पढ़ते हैं तो उस समय की परिस्थितियों और लिए गए निर्णय का ठीक–ठीक पता चल पाता है।

1947 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने **इंडिया इंडिपेंडेंस एक्ट** पारित किया। इसी के तहत भारत आजाद होने वाला था और इसी के तहत एक अलग पाकिस्तान देश बनना था। उस समय पूरे देश में लगभग 565 रियासतें थीं। रियासतों के पास तीन विकल्प थे। या तो वे भारत का हिस्सा बनते या फिर पाकिस्तान में जाते या स्वतंत्र रहते। एकीकरण का काम सरदार वल्लभ भाई पटेल को दिया गया और उन्हें रियासत मंत्रालय का प्रमुख बनाया गया। उन दिनों वी. पी. मेनन एक अच्छे सिविल सर्वेंट थे जिन्हें रियासत मंत्रालय का सचिव बनाया गया। वी. पी. मेनन ने पटेल जी के साथ मिलकर एक अभूतपूर्व काम किया जिसे आज भी याद किया जाता है। जो काम इटली के एकीकरण में गैरी बाल्डी और मैजिनी और जर्मनी में बिस्मार्क कर रहा था ठीक उसी तरह की भूमिका भारत के एकीकरण में पटेल जी की रही। निश्चित ही अगर उस तरह की भूमिका पटेल जी की नहीं रही होती तो आज हम बहुत सारे देश रहे होते। एकीकरण के अंत तक लगभग सारी रियासतें भारत में शामिल हो चुकी थीं लेकिन जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू कश्मीर के शामिल होने में अच्छा खासा विवाद उत्पन्न हो गया।

आजादी के समय की स्थिति ऐसी थी कि भारत का ठीक–ठाक हिस्सा जिसे हम ब्रिटिश इंडिया कहते हैं वह अंग्रेज हमें देकर जा रहे थे। करीब–करीब 40 प्रतिशत हिस्सा रियासतों के पास था। भारत की पांच टेरिटरी फ्रांस के पास थी चंद्रनगर, यनम, माहे, कराईकल और पांडिचेरी। पुर्तगाल के पास गोवा, दमन–दीव, दादरा नगर हवेली थे। इन सब को मिलाकर एक देश बनाना था, यह अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इसी बीच हमारे देश के लिए दो दुर्भाग्य और हुए। 1948 में गांधी जी की मृत्यु हो गई और 1950 में पटेल जी का निधन हो गया फिर भी जूनागढ़ और हैदराबाद के मसलों को पटेल जी सुलझाने में सक्षम रहे थे लेकिन जम्मू और कश्मीर का मसला लम्बे समय तक गले की हड्डी बना हुआ था। उस समय के वायसराय माउंटबेटन और कश्मीर के राजा हरि सिंह एक दूसरे से परिचित थे। जून 1947 में माउंटबेटन हरि सिंह से मिलने जम्मू–कश्मीर गए और उनसे आग्रह किया कि वे इस पर निर्णय जल्द से जल्द लें। लेकिन हरि सिंह वैसे ही राजा थे जैसे आमतौर पर राजा होते थे। वे लगातार माउंटबेटन को टालते रहे। उस समय कश्मीर में करीब–करीब 70 प्रतिशत आबादी मुस्लिमों की थी और राजा एक हिंदू था।

उन्हीं दिनों शेख अब्दुल्ला जब अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से अपनी पढ़ाई पूरी करके कश्मीर गए तो उन्हें नौकरी नहीं मिली। ऐसा कहते हैं कि उन दिनों राजा हरि सिंह मुसलमानों को नौकरी देने से बचते थे। अब्दुल्ला ने हताश होकर राजा के खिलाफ कश्मीर घाटी में कश्मीर छोड़ो आंदोलन चलाया और देखते ही देखते घाटी के लोग शेख अब्दुल्ला को अपना सर्वमान्य नेता मानने लगे। हालात को बिगड़ता देख हरि सिंह ने अब्दुल्ला को जेल में डाल दिया।

उधर जिन्ना सोचते थे कि बिना कश्मीर के पाकिस्तान का नक्शा अधूरा है। जिन्ना ने पाकिस्तानी फौज के एक बड़े अधिकारी अकबर खान को इसका ज़िम्मा दिया। उसने वजीरिस्तान के मुस्लिम ट्राईबल्स की एक फौज खड़ी की जिसमें पाकिस्तानी सेना के बहुत सारे लोग असैन्य वेशभूषा में शामिल थे। इसे ही **आजाद कश्मीर सेना** कहा जाता है। बाद में **पाक सेना के इसमें शामिल होने की बात खुद पाकिस्तान ने यूनाइटेड नेशंस में स्वीकार की थी।** अक्टूबर 1947 को करीब 10 हजार हथियारबंद लोग ट्रकों में भरकर श्रीनगर की तरफ बढ़े, जब यह बात राजा हरि सिंह को पता चली तो उन्होंने इसे बहुत ही हल्के तरह से लिया। राजा को अपने खुद की सेना पर विश्वास था। उस समय हरि सिंह के ब्रिगेडियर राजेंद्र सिंह थे। उन्होंने राजा को बताया कि हमारी सेना में 50 से 60 प्रतिशत सैनिक मुस्लिम हैं और हो सकता है कि पाक सेना उन्हें प्रलोभन दे कि हम कश्मीर को

इस्लामिक राष्ट्र बनाएंगे और सुविधाएँ और ओहदे बढ़ा देंगे इसलिए यह खतरा है कि कहीं वह उनके पक्ष में न चले जाएं। उधर धीरे–धीरे कबाइली मुजफ्फराबाद पहुंचे जहां से श्रीनगर करीब डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी पर था। राजा हरि सिंह की सेना का एक बड़ा हिस्सा कबाइलियों के साथ मिल गया। स्थिति को बिगड़ता देख हरि सिंह ने दिल्ली फोन किया और मदद की गुहार लगाई लेकिन लॉर्ड माउंटबेटन कश्मीर में भारतीय सेना भेजने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि यूनाइटेड नेशन की स्थापना अभी हाल ही में हुई थी और भारत अभी–अभी आजाद हुआ था। राजा हरि सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर भी नहीं किए थे इसलिए माउंटबेटन कोई भी अंतरराष्ट्रीय युद्ध अभी नहीं चाहते थे।

कबाइली तेजी से आगे बढ़ रहे थे। और वे उरी जा पहुंचे। वहां एक पुल हुआ करता था जो उरी को श्रीनगर से जोड़ता था। राजेंद्र सिंह ने उस पुल को ध्वस्त कर दिया जिसमें उनकी जान चली गई। पुल के ध्वस्त होने से कबायली आगे बढ़ नहीं पाए। कबाइलियों को दो दिन के लिए नदी के उस पार रोक दिया गया। अगर वो दो दिन नहीं मिले होते तो आज शायद कश्मीर हमारा नहीं होता। 25 अक्टूबर 1947 को नदी पार करके कबायली बारामुला पहुंचे और वहां पहुंचते ही उन्होंने कत्लेआम मचाना शुरू कर दिया। हजारों स्त्रियों के साथ बलात्कार किए, घर जला दिए और बड़े स्तर पर लूटपाट किया। उस समय बारामुला की आबादी करीब एक तिहाई ही रह गई थी और कबायलियों ने श्रीनगर को चारों तरफ से घेर लिया। उधर जम्मू कश्मीर के प्रधानमंत्री मेहर चंद महाजन और वीपी सिंह राजा के पास जम्मू आए और उनसे कहा कि अब कश्मीर को बचाने का केवल एक ही रास्ता है विलय पत्र पर हस्ताक्षर। राजा ने हस्ताक्षर कर दिए। रात में सोने जाने से पहले हरि सिंह ने एडीसी को पिस्तौल निकाल कर दी और बोले कि अगर कल तक भारतीय विमान श्रीनगर में नहीं दिखे तो मुझे जगाना मत नींद में ही गोली मार देना।

जो लोग कहते हैं कि जम्मू कश्मीर के विलय पत्र की भाषा कंडिशनल थी उन्हें पता होना चाहिए कि बाकी 565 रियासतों की भाषा भी वैसी ही थी जैसी जम्मू कश्मीर के विलय को लेकर थी उसमें कोई बदलाव नहीं किया गया था और जैसे ही माउंटबेटन ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया 27 अक्टूबर 1947 को पालम और सफदरजंग एयरपोर्ट से भारतीय हवाई जहाजों ने श्रीनगर की तरफ उड़ान भरना शुरू किया। इसी बीच नेहरू के दबाव में राजा हरि सिंह ने शेख अब्दुल्ला को जेल से रिहा कर दिया। अब्दुल्ला और उनकी पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस ने कश्मीर में भारतीय सेना की काफी मदद की क्योंकि उनके मन में यह स्पष्ट था कि मिलना तो भारत से ही है। उधर इन सब से तिलमिलाए जिन्ना ने अपने कमांडर जनरल ग्रेसी को युद्ध करने का आदेश दे दिया लेकिन जनरल ग्रेसी ने उनके लिखित आदेश को नहीं माना। ग्रेसी का कहना था कि इस विषय पर सुप्रीम कमांडर ऑकनलेक का निर्णय सर्वमान्य होगा। उस समय भारत का भी सुप्रीम कमांडर एक ब्रिटिशर था इसलिए यह युद्ध ब्रिटेन का ब्रिटेन के ही खिलाफ होता इसलिए जिन्ना के युद्ध संबंधी किसी भी आदेश को ऑकनलेक ने मानने से साफ मना कर दिया। तब जिन्ना ने नेहरू और माउंटबेटन को इस मुद्दे पर बात करने के लिए लाहौर बुलाया लेकिन पाकिस्तान की इन हरकतों से पटेल जी बातचीत के पक्ष में नहीं थे। अंत में 1 नवंबर 1947 को माउंटबेटन अकेले लाहौर पहुंचे और वार्ता लगभग असफल रही। इधर भारत में नेहरुजी ने भाषण दिया कि जैसे ही कश्मीर में शांति व्यवस्था कायम होगी उसके बाद जनमत संग्रह करवाया जायेगा। माना जाता है कि इस भाषण के बाद ही स्थिति हमारे हाथ से निकल गई और जनमत संग्रह की मांग तेज़ हो गई।

युद्ध लगभग सवा साल तक चला। अंत में नेहरु दिसम्बर 1947 को संयुक्त राष्ट्र (UN) पहुंचे। और चैप्टर–6 के तहत अपील की। इस चैप्टर के तहत संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा किये गए फैसले को मानना बाध्यकारी नहीं होता है। सुरक्षा परिषद् में इंग्लैंड और अमेरिका ने भारत के विरोध में पक्ष रखा। 21 अप्रैल 1948 को संयुक्त राष्ट्र ने एक संकल्प (resolution) भी पारित किया। इसके तीन हिस्से थे।

- सीज़फायर आर्डर–जिस दिन दोनों देश इस फैसले को स्वीकार करेंगे उसी जगह पर युद्ध रोककर नियंत्रण रेखा (LOC) बनाई जाएगी।
- युद्ध विराम–पाक ने यह माना कि कश्मीर युद्ध में पाक सेना भी शामिल है इसलिए सबसे पहले पाक अपनी सेना को वापस बुलाएगा और जो पाक जनजातीय लोग युद्ध में शामिल हैं उन्हें भी कश्मीर से वापस बुलाएगा।
- और जब संयुक्त राष्ट्र आयोग भारत सरकार को सूचना देगा कि पाक ने पहले दोनों कदम पूरा

मेरा ख्याल है, खुली हवा में मेरा विश्वास उतना ही पक्का है, जितना महाकवि का। मैं नहीं चाहता कि मेरे घर को दीवारें चारों ओर से घेरे हुए हों और उसकी खिड़कियां बंद हों। मैं चाहता हूं कि सभी देशों की संस्कृतियां मेरे घर के इर्द–गिर्द पूरी आजादी से मंडराएं। लेकिन उनमें से किसी भी संस्कृति को मैं अपने पांव को डिगाने नहीं दूंगा। झूठी इज्जत और झूठी शान के लिए हमारी बहनें अंग्रेजी पढ़ने की जहमत उठाएं, इसे मैं गवारा नहीं कर सकता। साहित्यिक रूचि रखने वाले युवक और युवतियाँ अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें और जरूर पढ़ें। लेकिन उनसे मैं आशा करता हूं कि वे अपने ज्ञान के प्रसाद को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राय और स्वंय कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया। मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूँगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता है। कैदखाने का धर्म मेरा धर्म नहीं है। परमात्मा की सृष्टि में छोटे से छोटे जीवों के लिए भी स्थान है। मगर अहंकार तथा रंग, धर्म या जाति के अभिमान के लिए उनमें कोई जगह नहीं है।

–महात्मा गांधी

कर लिए हैं तब भारत अपनी सेना को पीछे लाना शुरू करेगा।

- अन्य–इसमें लिखा गया कि दोनों देश इस बात से सहमत हैं कि जम्मू कश्मीर का अंतिम फैसला वहां की जनता की इच्छा से होगा और जब पहली वाली शर्तें पूरी कर ली जाएंगी तो स्थानीय प्रशासन की मदद से जनमत संग्रह कराया जायेगा।

दोनों देशों की सहमति के बाद इस संकल्प (resolution) को मान लिया गया। एक बात स्पष्ट है नेहरू जब जनमत संग्रह की बात कर रहे थे तो उन्हें स्पष्ट रूप से पता था कि जम्मू और लद्दाख भारत के पक्ष में हैं, कश्मीर मुस्लिम बहुल है और वहां का लोकप्रिय नेता शेख अब्दुल्ला भारत में ही विलय के पक्ष में हमेशा से रहा है। इसलिए नेहरू यह मानते थे कि अगर जनमत संग्रह होगा भी तो यह भारत के ही पक्ष में ही होगा।

31 दिसंबर 1948 को युद्ध ख़त्म हुआ। भारत के 1100 सैनिक शहीद हुए। करीब एक तिहाई हिस्सा (PoK) पाक के अधीन चला गया और भारत के पास दो तिहाई हिस्सा बचा रह गया।

आगे किस तरह से जम्मू कश्मीर का प्रशासन चलाया जाए इसके लिए संविधान में क्या व्यवस्था हो इसी सब बात के लिए नेहरु, पटेल और शेख अब्दुल्ला दिल्ली में मिले जिसे दिल्ली समझ (Delhi Understanding) भी कहते हैं। जम्मू कश्मीर के प्रतिनिधि के तौर पर चार व्यक्तियों को संविधान सभा में शामिल किया गया। शेख़ अब्दुल्ला, मिर्ज़ा अफ़ज़ल बेग, मसूदी और मोतीराम बागड़ा। संविधान सभा की आम सहमति से आर्टिकल 306(A) का ड्राफ्ट तैयार किया गया यही आगे जाकर आर्टिकल 370 बन गया।

आर्टिकल 370 की प्रमुख बातें:

- यह एक Temporary and transitional provision था।
- इसके तहत जम्मू और कश्मीर का अपना स्वयं का संविधान था।
- जम्मू कश्मीर पर संविधान का भाग–6 नहीं लागू था जिसमें राज्य सरकार से सम्बंधित provision हैं।
- 1950 में राष्ट्रपति का आदेश जारी किया गया जिसमें लिखा था कि संसद जम्मू कश्मीर के मामले में क्या–क्या काम कर सकती है इसमें मुख्यत: विलयपत्र के तीन विषय रक्षा, संचार, विदेश के मामलों का जिक्र था।
- 1951 में जम्मू कश्मीर संविधान सभा का गठन हुआ और 26 नवम्बर 1950 को संविधान लागू हुआ। इस बीच कई बातें हुईं। 1952 में शेख अब्दुल्ला और भारत सरकार के बीच कई मुद्दों पर बातचीत हुई जिसमें वज़ीर–ए–आज़म को प्रधानमंत्री कहना, जम्मू कश्मीर की डेमोग्राफी में बदलाव न किया जाना ताकि बाहर से आकर लोग बस न पाएं शामिल थीं। इसी को दिल्ली समझौता (Delhi Agreement) कहते हैं। उस समय शेख अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर के प्रधानमंत्री के तौर पर काम कर रहे थे और उन्होंने हरि

सिंह को हटाकर उनकी जगह उनके बेटे कर्ण सिंह को सदर–ए–रियासत बनाया। अब्दुल्ला समझते थे कि कर्ण सिंह उम्र में छोटे हैं इन्हें राजनीति का बहुत ज्यादा इल्म नहीं है लेकिन 1953 में कर्ण सिंह ने ही शेख अब्दुल्ला की सरकार को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के कारण बर्खास्त कर दिया। कहते हैं कि यह बर्ख़ास्तगी नेहरु जी के निर्देश पर हुई थी। 1953–1975 तक जम्मू कश्मीर पर केंद्र का ही शासन रहा।

- 1954 में फिर से राष्ट्रपति का आदेश जारी हुआ और इसी के तहत 35(A) अस्तित्व में आया।

35(A) क्या था–

- कौन जम्मू कश्मीर का स्थायी नागरिक है इसे वहां की सरकार तय करेगी।
- कुछ विशेष अधिकार दिए गए जैसे कि किसी और राज्य का व्यक्ति वहां जमीन नहीं खरीद सकता है।
- नौकरी और आरक्षण उन्हीं को मिलेगा जो वहां के स्थाई नागरिक हैं।
- जो महिला जम्मू कश्मीर के बाहर शादी करेगी उसे भी स्थाई नागरिक नहीं माना जाएगा और उसके बच्चों को भी संपत्ति का अधिकार नहीं मिलेगा।

जम्मू कश्मीर का शासन केंद्र सरकार के द्वारा चलाया जा रहा था। मई 1964 में नेहरू जी का निधन हो गया। शेख अब्दुल्ला को कश्मीर से दूर कोडईकनाल हिल स्टेशन पर लगभग 20 साल तक हाउस अरेस्ट रखा गया था ताकि वो कश्मीर की शांति व्यवस्था को भंग न कर सकें।

1965 में लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री बने और इनके ही समय भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ जिसमें पाकिस्तान बुरी तरह हार गया लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था पर भी इसका बुरा असर पड़ा।

शास्त्री जी की मृत्यु के बाद 1966 में इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनीं। उनके लिए गए कड़े फैसलों के कारण हिल स्टेशन में बैठे शेख अब्दुल्ला के सुर बदलने लगे। अब्दुल्ला ने माना कि अब जनमत संग्रह की बात करना बेमानी है और 1975 में अपनी मांगों के साथ शेख अब्दुल्ला और इंदिरा गांधी की बैठक हुई। इंदिरा गांधी के द्वारा रखे गए लगभग सारे प्रस्तावों को शेख अब्दुल्ला ने मान लिया और 1975 में शेख अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री बन गए। अब्दुल्ला

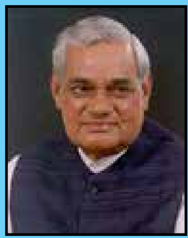

25 दिसम्बर, 1924–
16 अगस्त, 2018

भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाईं से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें–
बुझी हुई बाती सुलगाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं

हम पड़ाव को समझें मंजिल
लक्ष्य हुआ आँखें से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में –
आने वाला कल न भुलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विध्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने–
नव दधीचि हड्डियां गलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं

–भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी

1975 से 1982 तक जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री बने रहे। 1982 में उनका निधन हो गया और इसके बाद उनके बेटे फारूक अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने। जम्मू कश्मीर में मिलिटेंसी की शुरुआत 1986 में शुरू हुई। 1987 का चुनाव जम्मू कश्मीर के लिए ऐतिहासिक घटनाक्रम माना जाता है। इस चुनाव में वहाँ के अलगाववादी नेताओं ने भारत सरकार पर चुनाव में हस्तक्षेप करने और फारूक अब्दुल्ला को चुनाव जिताने का आरोप लगाया। फारूक अब्दुल्ला के चुनाव जीतने के बाद वहां के उग्रवादी गुटों (JKLF) ने सशस्त्र विद्रोह का रास्ता अपनाया। इसके बाद काफी लंबे समय तक वहां राष्ट्रपति शासन लगा रहा। अंततः 1990 में AFSPA J&K कानून पास हुआ और उसके बाद जम्मू कश्मीर की मिलिटेंसी को काबू करने में 10 से 15 साल लग गए। भारत की नई सरकार के प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत का नारा दिया। 2002 में जम्मू कश्मीर में फिर चुनाव हुए और फारूक अब्दुल्ला फिर मुख्यमंत्री बने। चीजें ज्यों कि त्यों चलने लगी।

भारत के 2014 के आम चुनाव ऐतिहासिक थे। पहली बार केंद्र में अपने बहुमत पर कोई सरकार बनी जिसका सबसे प्रमुख एजेंडा आर्टिकल 370 को ख़त्म करना भी था।

जनसंघ के बड़े नेता और इसके संस्थापकों में से एक श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी कभी धारा 370 के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन चलाया था। उनका नारा था – **एक देश में दो संविधान, दो विधान और दो निशान नहीं चलेगा।**

भारत की संसद में 5 अगस्त 2019 को आर्टिकल 370 को बहुमत से खत्म कर दिया गया।

इस फैसले के पीछे एक लंबी पृष्ठभूमि थी। 19 दिसंबर 2018 को कश्मीर के राज्यपाल ने भारत के राष्ट्रपति को एक रिपोर्ट भेजी थे जिसके बाद कश्मीर में अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। 5 अगस्त 2019 को संसद में जम्मू कश्मीर पुनर्गठन बिल 2019 पेश किया गया जिसे संसद ने दो तिहाई बहुमत से पास कर दिया जो एक बड़ा ऐतिहासिक बदलाव था। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के उपरांत यह कानून बन गया जो 31 अक्टूबर 2019 से लागू हो गया।

जम्मू कश्मीर अपनी विधानसभा के साथ एक केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया और लद्दाख इससे अलग करके एक अलग यूनियन टेरिटरी बन गया।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कई दशकों से चले आ रहे मसले की बेहद समझदारी और जिम्मेदारी के साथ निजात पाने की कोशिश आखिरकार सफल रही। कश्मीर की खूबसूरती आतंकियों की दहशतगर्दी से रोजाना रौंदी जा रही थी। उसी कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत को वापस गुलज़ार करने के लिए यह फैसला लिया गया। किसी शायर ने कभी लिखा था–

'गर फिरदौस बर रूये ज़मीं अस्त।
हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त'।

(धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं हैं।)

व्योमकेश शर्मा
संपादक

स्वर्णिम विहान– आरईसी के 50 वर्ष

मैं, आरईसी हूँ,
असीमित ऊर्जा,
अनंत संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ!

50 वर्ष,
महज एक पड़ाव है,
एक स्वर्णिम विहान है,
उमंग और उत्साह का आविर्भाव है,
गाँव, समाज, देश की तस्वीर बदल रहा हूँ।

हरित क्रांति से सहज बिजली तक,
संकल्प से सिद्धि तक,
अंधेरे से उजियारे तक,
राष्ट्र के समग्र विकास की नई राहें
खोल रहा हूँ।

बदलते रहना प्रकृति का नियम है,
मैं भी समय के साथ बदल रहा हूँ,
आज के माहौल में,

ढलने की कोशिश कर रहा हूँ,
नवरत्न हूँ,
महारत्न की राह पर अग्रसर हूँ,
नई संभावनाओ के नए पंख,
नई दिशा में फैला रहा हूँ।

आने वाला समय शुभ हो,
पूर्ण हो,
फलीभूत हो,
सशक्त, समृद्ध और नए भारत निर्माण में स्वयं को समर्पित कर रहा हूँ।

अवनीश भारती
मुख्य प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगमित मुख्यालय

कभी अभावों में खुशियां थी अब खुशियों का अभाव है: कुछ प्रसंग

कहते हैं कि खुशी मन की अवस्था है केवल कामयाबी पाने से खुशी नहीं मिलती। बात स्कूल के दिनों की है जब मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता था। जिस दिन परीक्षा का परिणाम निकलना था, मैं विद्यालय पहुंचा। कक्षा में मेरा स्थान आठवाँ आया। अभी सोच ही रहा था कि प्रथम आता तो कितनी खुशी होती, मजा ही आ जाता। तभी नजर उस सहपाठी पर पड़ी जिसका कक्षा में द्वितीय स्थान था। उस चेहरे पर उदासी थी। जब पूछा तो पता चला की प्रथम ना आने की वजह से वह दुखी है। यह देखा तो सोचा चलो जो प्रथम आया है उसे ही बधाई दे आएँ। जब बधाई देने पहुंचे तो देखा कि उसके चेहरे से भी खुशी के चिन्ह गायब थे। पूछने पर पता चला कि वह इस चिंता में है कि पता नहीं अगली कक्षा में इसी तरह प्रथम आ पाएगा या नहीं। तभी नजर उस सहपाठी पर पड़ी जिसके 34% अंक आए थे। बहुत खुश था कि मैं पास हो गया। उस दिन यह बात तो समझ में आ गई कि जिसे खुद को खुश रखना नहीं आता हो वह सफल होकर भी खुश नहीं हो सकता।

(i)

मेरे बचपन की बात है। मेरे छोटे फूफा जी के एक मित्र का व्यापार चल नहीं पाया। जिससे वह भारी कर्ज में डूब गए। वह फूफा जी की तरह ही आगरा में फल मंडी में आढ़तिया थे। जब फूफा जी को पता चला कि वह व्यापार ना चलने की वजह से शहर छोड़ कर जा रहे हैं। तो उन्हें बस अड्डे से वापस ले आए। अपने भाई बंधुओं व मित्रों से कुछ धन इकट्ठा कर उनकी दोबारा से व्यापार शुरू कराने में सहायता की। कई सालों बाद, आगरा फल और सब्जी मंडी छीपीटोला से स्थानांतरित होकर सिकंदरा गई तो जो लोग सिकंदरा मंडी में दुकान ना खरीद पाए और छीपीटोला मंडी में ही व्यापार करते रहे उनके लिए जैसे मंदी का दौर चालू हो गया। धीरे धीरे करके सबके व्यापार का बुरा हाल हो गया। आज वहाँ जब भी किसी को कर्ज में डूब कर अपना व्यापार छोड़ना पड़ता है तो छिपीटोला मंडी के व्यापारी तो छोड़ो सिकंदरा मंडी के वो व्यापारी जो बहुत सफल हैं वह भी उसकी मदद के लिए आगे नहीं आते।

अब वो दिन नहीं रहे जब हर कोई दूसरों की मदद करने को तैयार रहता था। शायद उन दिनों महंगी सुविधाओं और मदद करने से रोकने वाले विचारों का अभाव था। तभी शायद महंगी सुविधाओं के सेवन के बाद लोगों के पास पैसा कम पड़ गया हो।

(ii)

आइए एक नजर डालते हैं परिवारों के रहन–सहन पर। लोग संयुक्त परिवार में रहते थे। मेरे दादा–दादी जी के तीन लड़के व चार लड़कियां थे। तीनों लड़के, उनकी पत्नियाँ, दादा दादी और हम ग्यारह भाई बहन एक साथ एक घर में रहते थे। चार में से तीन लड़कियां भी आगरा में ही रहती थीं। तीनों भाई, उनके दोनों जीजाजी (मेरे दो फूफा जी) और तीनों जीजाजियों (मेरे तीनों फूफा) के लड़के फल मंडी में ही आढ़तिया थे। मंडी हर महीने की एक तारीख को बंद रहती थी। जब भी महीने की एक तारीख आती थी तो मेरी बुआओं के लड़के घर आ जाते थे। हम सभी मिलकर क्रिकेट या अन्य कोई खेल खेला करते हैं। शाम होते होते बुआएँ और फूफा जी भी आ जाते। घर में ऐसा जश्न हो जाता जैसे कोई त्यौहार हो। हर घटना या समारोह पर सभी इकट्ठे होते। मिल बांटकर सारे काम करते और काफी आनंद लेते। आज जब उन सभी को देखता हूं तो सभी अलग–अलग अपने अपने परिवार (एकल परिवार) के साथ अपने अपने अलग घरों में रहते हैं। शादी में ही मिलना हो पाता है।

अब वो दिन ना रहे जब सभी साथ एक ही घर में रहते थे और हर छोटी बड़ी खुशी बांटते थे। शायद तब सस्ते घरों और सस्ते गृह ऋणों का अभाव था।

(iii)

दीपावली आने वाली होती तो कुछ माह पहले ही पटाखे एकत्रित करने लगते। जन्माष्टमी का नाम सुनते ही सजावट का सारा सामान इकट्ठा करने लगते। उसी प्रकार होली से पहले गुब्बारे व गुलाल, रक्षाबंधन से पहले सब के लिए तोहफों की तैयारी करना। हर तरफ

जैसे खुशियों का मेला सा लगा हो। परंतु जब आज पर ध्यान देता हूं तो बाजार में भी एक हफ्ता पहले ही त्यौहारों का सामान आता है। लोग त्योहार वाले दिन सोच रहे होते हैं कि पूरा दिन बैठकर दूरदर्शन पर कौन सा चैनल देखना है, कौन से हलवाई पर कम मिलावट वाली मिठाई मिलेगी, कौन कौन से रिश्तेदार को फोन करके बधाई देनी चाहिए, जिससे उन्हें बुरा ना लगे और बोल ना दें कि आप तो याद ही नहीं करते। अब वो दिन ना रहे जब सभी साथ मिलकर हर त्योहार मनाते थे। शायद तब मनोरंजन के साधनों का अभाव था।

(iv)

जब भी घर में कोई विवाह होता था, कुछ दिन पहले ही रिश्तेदार आ जाते थे और सारी रस्में व रीति रिवाज निभाए जाते थे। हर रोज घर में भंडारा होता और सभी रिश्तेदार शादी के तीन–चार दिन बाद ही घर से जाते थे। सभी रिश्तेदार शादी के काम में हाथ बंटाते और हर किसी को किसी काम की ज़िम्मेदारी सौंप दी जाती। शादी का समारोह सभी के योगदान से पूरा हो होता। पर आज शादियों में लोग घर पर तो बुलाते ही नहीं सीधा होटल में बुलाते हैं। वहां से मैरिज हॉल, मैरिज हॉल से होटल और होटल से वापस घर। बस जरूरी जरूरी रस्में दो दिन में ही निपटा दी जाती हैं। कोशिश तो ये रहती है कि आने वाले रिश्तेदारों को एक दिन से ज्यादा परेशान न किया जाए।

अब वो दिन नहीं रहे जब शादी का जश्न पूरे महीने मनाया जाता था। शायद तब मैरिज हॉल और सस्ते व पेशेवर काम करने वालों का अभाव था।

(v)

जब छोटे थे तो सुना करते थे कि जिसका कोई छोटा भाई होता है वह अपना नया रोजगार लगाने की कोशिश करता ताकि छोटा भाई पिता का व्यापार संभाल पाये। अपने पिताजी के दफ्तर या दुकान के साथ ही कोई दुकान या दफ्तर खोजता ताकि कभी कहीं जाना पड़े या कोई और काम हो तो छोटा भाई या पिता जी थोड़ी देर दुकान या दफ्तर का ध्यान रख लें। उन दिनों जब भी किसी का काम (उद्योग) ना चल पाता अथवा घर में आर्थिक मंदी हो जाती तो उसे दूसरे शहर या विदेश में धन कमाने जाना पड़ता और कुछ साल में धन कमाकर वापस वहीं आकर कोई दूसरा व्यापार खोजता ताकि अपनों के साथ रह सके। जब भी किसी का व्यापार नहीं चलता, मजबूर होकर उसे कोई नौकरी ढूंढनी पड़ती। पर आज के लोगों की सोच में थोड़ा बदलाव हो गया है। अब घर से दूर रहकर ही सफल हो सकते हैं, यह सोचा जाता है। जिसे दूसरे शहर या विदेश में नौकरी मिल जाती है उसे ज्यादा सफल माना जाता है अपना काम तो मजबूरी में ही खोलना पड़ता है, जब कोई नौकरी ना लगे।

अब वो दिन ना रहे जब घर वालों के साथ रहना ही कामयाबी माना जाता था। शायद तब ज्यादा पैसे देने वाली नौकरियों का अभाव था।

ये वो बातें हैं जो जीवन शैली के बदलाव को लेकर पहले और आज के समय में अंतर बयां करती हैं। परंतु यह आज भी समझ नहीं आता कि हम विकास की ओर बढ़ रहे हैं या मशीन बनते जा रहे है।

यह सोचते हुए जब मैंने इंटरनेट की ओर रुख किया तो पता चला कि 2018 के सर्वे के अनुसार, 156 देशों में से भारत का स्थान विश्व प्रसन्नता सूचकांक (वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स) में 133 वां है। वहीं भारत 2017 में 122 वें स्थान पर, 2016 में 198 वें नंबर पर, 2015 में 117 वें नंबर पर और 2013 में 111 वें नंबर पर था।

आइए एक नजर उन मापदंडों पर भी डालें जिससे ये विश्व प्रसन्नता सूचकांक (वर्ल्ड हैप्पीनेस इंडेक्स) निकाला जाता है।

पहला मापदंड है "जी डी पी पर कैपिटा (अर्थात प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद)"

दूसरा मापदंड है "सोशल सपोर्ट (अर्थात सामाजिक समर्थन)"

तीसरा मापदंड है "हैप्पी लाइफ एक्सपेक्टेंसी बाय बर्थ (अर्थात जन्म के समय स्वास्थ्य जीवन प्रत्याशा)"

अगला मापदंड है "फ्रीडम टू मेक लाइफ चॉइस (अर्थात जीवन का विकल्प चुनने की स्वतंत्रता"

पांचवा मापदंड है "जेनेरोसिटी (अर्थात उदारता)"

आखरी और अन्तिम मापदंड है "परसेप्शन आफ करप्शन (अर्थात भ्रष्टाचार की धारणाएं)"

इन तथ्यों के आधार पर यह तो पता नहीं चलता कि पहले का जीवन अच्छा था या आज का जीवन अच्छा है परंतु इतना तो जरूर पता चलता है कि पहले अभाव में खुशियां थीं अब खुशियों का अभाव है।

कुंदन लाल
सहायक प्रबन्धक (इंजीनियरिंग)
आरईसी निगमित मुख्यालय

एकनाथ रानाडे– एक समर्पित जीवन की कहानी

मार्च 2019 में मुझे अपने परिवार के साथ दक्षिणी भारत घूमने का मौका मिला। हम लोगों ने तमिलनाडु में कन्याकुमारी और केरल में त्रिवेंद्रम, मुन्नार, गुरुवायुर एवं कोच्चि जाने का मन बनाया था। सफर की शुरुआत में मेरा पहला पड़ाव कन्याकुमारी था। जैसा कि पिताजी ने बताया था मैं विवेकानंद केंद्र के गेस्ट हाउस में ही रुका।

यह स्थान अद्भुत है, बहुत ही मनोरम, शांति और सुकून से भरा हुआ। यहाँ पर सभी रुकने वालों को केले के पत्ते पर दक्षिण भारतीय भोजन दिया जाता है। इस जगह पर दक्षिण भारत घूमने वाले किसी भी व्यक्ति को सब कुछ एक साथ मिल जाता है। विवेकानंद केंद्र का माहौल आध्यात्मिक है और ऊपर से कन्याकुमारी में सूर्य के उदय और अस्त होने का मनोहारी दृश्य। मुझे यह जगह धरती के स्वर्ग जैसी प्रतीत होने लगी थी।

यहाँ पहुंच कर मुझे पता चला कि इस केंद्र की स्थापना श्री एकनाथ रानाडे जी नाम के एक स्वयंसेवक ने की थी। इस लेख के माध्यम से मैं इसी महापुरुष के दृढ़निश्चय, परिश्रम और परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की कहानी आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि देश का हर व्यक्ति ऐसे लोगो के बारे में जाने और उनके जीवन से प्रेरणा ले।

एकनाथ रानाडे जी का जन्म महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव तीतमाला में 19 नवंबर, 1914 में हुआ था। वह बचपन से ही बड़े मेधावी छात्र थे और अपने परिवार की कठिन विपरीत आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने नागपुर के डिग्री कॉलेज बी. ए. (ऑनर्स) किया।

रानाडे जी के जीवन पर स्वामी विवेकानंद का बहुत प्रभाव पड़ा वे स्वामी जी के हिन्दू दर्शन के विश्लेषण से बहुत प्रभावित थे। स्वामी जी के 'नर सेवा नारायण सेवा' को तो मानो उन्होंने अपने जीवन का ध्येय ही बना लिया था।

सन 1963 में स्वामी विवेकानंद के जन्म के 100 साल पूरा होने पर उन्होंने एक किताब प्रकाशित की जिसका नाम था 'रौसिंग कॉल टू हिन्दू नेशन'। यह पुस्तक स्वामी विवेकानंद जी के विचारों, उनके भाषणों, स्वामी जी के मानव जाति के विवेक, स्वाभिमान को जगाने के लिए कही गयी बातों का एक संकलन है तथा एक महान राष्ट्रवादी, मानवताप्रेमी, आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण महामानव स्वामी विवेकानन्द जी को श्रद्धांजलि भी है।

उसी वर्ष रानाडे जी ने एक और काम अपने जिम्मे लिया वह काम था विवेकानंद रॉक मेमोरियल बनाने का। यह वही मेमोरियल है जो आज भी भारत के अंतिम छोर पर खड़ा भारत की पहचान का प्रतीक बन गया है। यह मेमोरियल समुद्र में चट्टान के बीच स्वामी विवेकानंद की ग्रेनाइट से बनी प्रतिमा है।

यह मेमोरियल बनाने का प्रस्ताव तत्कालीन 'शिक्षा और संस्कृति मंत्री' एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने नकार

विवेकानंद रॉक, कन्याकुमारी

कन्याकुमारी समुद्रतट से विवेकानंद रॉक और तमिल कवि तिरुवल्लुवर की मूर्ति का दृश्य

दिया था पर रानाडे जी ने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया, यह स्थान उनके लिए विशेष था क्योंकि जब स्वामी विवेकानंद विदेश भ्रमण के पश्चात कन्याकुमारी आये थे तो इसी चट्टान पर 3 दिनों तक साधना की थी। इसी स्थान पर स्वामी जी ने आध्यात्मिक साधना की और भारत माता के सजीव दर्शन किए। दीन–हीन भारत माँ के संतानों के प्रति भाव–विभोर होकर उन्ही में उन्होंने परमात्मा का अंश देखा और नर सेवा नारायण सेवा का सूत्र प्रतिपादित किया।

रानाडे जी ने मन ही मन यहाँ विवेकानंद जी की मूर्ति बनाने का संकल्प लिया, इसे पूरा करने के लिए, उन्होंने एक प्रस्ताव तैयार किया और 350 से अधिक संसद सदस्यों के हस्ताक्षर बहुत ही कम समय में कराए। इस अभियान के कारण ही सुदूर कन्याकुमारी की आखिरी चट्टान पर विवेकानंद जी की मूर्ति बनाने का प्रस्ताव, भारत सरकार द्वारा स्वीकार किया गया। अब अगला लक्ष्य था धन की व्यवस्था करना। रानाडे जी इस मेमोरियल को भारत वर्ष की आकांक्षाओं के प्रतिबिम्ब के रूप में स्थापित करना चाहते थे। इसी कारण निर्माण का कुल खर्च शुरुआत में 30,000 रुपये से बढ़कर करीब 135 लाख रुपये हो गया था। सभी की सहभागिता से धन जुटाने के लिए उन्होंने लोगों से एक–एक, दो–दो और पाँच–पाँच रुपए तक दान में लिए। देश की विभिन्न राज्य सरकारों से मदद ली, विषम से विषम परिस्थितियों में काम रूकने नहीं दिया। और आखिरकार रानाडे जी के नेतृत्व व कारीगरों की कड़ी मेहनत से कार्य पूर्ण हुआ और स्वामी विवेकानंद के एक भव्य शिला स्मारक का निर्माण हुआ।

रानाडे जी ने सन 1972 में 'विवेकानंद केंद्र' की संस्था का निर्माण किया, उन्होंने विवेकानंद केंद्र की कल्पना स्वामी विवेकानंद के विचार 'वे लोग अकेले जीवित हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं बाकी सभी मृत के समान हैं' को आंदोलन का रूप देने के लिए की थी, मुझे यहाँ आकर पता लगा कि यह संस्था देश के जनजातीय समाज व उत्तरपूर्व के राज्यों में शिक्षा, अध्यात्म व सेवा के अनेको प्रकल्पों का संचालन करते हुए राष्ट्र निर्माण के कार्य में अपनी आहुति दे रही है। हाल ही में भारत सरकार ने 'विवेकानंद केंद्र' को ग्रामीण विकास, शिक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के विकास में योगदान के लिए 2015 का गाँधी शांति पुरस्कार दिया है।

22 अगस्त, 1982 को चेन्नई में रानाडे जी का भारी हृदयाघात से देहांत हो गया। कन्याकुमारी में बना विवेकानंद शिला स्मारक स्वामी विवेकानंद जी के साथ श्री एकनाथ रानाडे की कीर्ति का भी सदा गान करता रहेगा।

ऐसे महामानव को मेरा नमन है जिसने उत्कृष्ट राष्ट्रभक्ति, अध्यात्म और समाज सेवा में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था।

असीम गुप्ता
सहायक प्रबंधक (इंजीनियरिंग)
आरईसी निगमित मुख्यालय

पुस्तकालय में आपके नए मित्र

बचपन से ही मुझे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है। जब भी कभी वक्त मिलता था तो मेरे कदम आस–पास के पुस्तकालय की ओर मुड़ जाते थे। कुछ वक्त पहले मैंने और मेरी पत्नी ने तय किया था कि हम घर में कुछ समय टीवी बंद करके अलग–अलग टॉपिक पर किताबें पढ़ेंगे। इसी सिलसिले में मैं एक दिन आरईसी के पुस्तकालय में कुछ दिलचस्प पुस्तकें ढूंढने गया। काफी ढूंढने के बाद भी मुझे समझ नहीं आया कि कौन सी पुस्तक पढ़नी चाहिए। फिर मैंने अपने प्रिय मित्र व्योमकेश जो लाइब्रेरी के संयोजक सदस्य हैं उनसे सलाह मांगी। उन्होंने तुरंत कुछ अच्छी पुस्तकों का नाम सुझाया। लगभग 8–9 किताबें थीं। मैंने लाइब्रेरी से दो किताबें इश्यू करा लीं और पढ़ा। इन किताबों के बारे में मैं कुछ लिखना चाहता था। दोनों किताबों में से मैंने 'डार्क हॉर्स' और मेरी पत्नी ने 'दिल्ली दरबार' पढ़ी।

दिल्ली दरबार (सत्य व्यास)

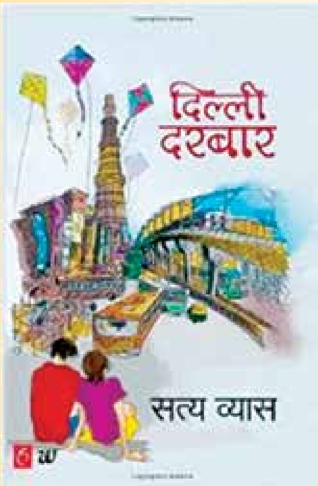

दिल्ली दरबार सत्य व्यास द्वारा लिखी गई दूसरी किताब है। उनकी पहली किताब बनारस टॉकीज थी। सत्य व्यास नई हिंदी के वर्तमान समय के लेखक हैं उनकी पहली किताब बनारस टॉकीज 2015 की प्रमुख 5 किताबों में से एक रही है।

सत्य व्यास की किताब 'दिल्ली दरबार' की कहानी कुछ ऐसे शुरू होती है– **"उस रोज़ दो घटनाएं हुई थीं। दिन में मोहल्ले वालों ने शुक्ला जी की टीवी पर रामायण देखा और रात में महाभारत हो गया।"** और पूरी किताब में आपको कई ऐसी या इससे भी बेहतर पंच लाइने मिल जाएंगी जो आपको मुस्कुराने पर मजबूर देंगी।

दिल्ली दरबार कहानी एक हद से ज्यादा लापरवाह, दिलफेंक आशिक, और चालाक – कुल मिलाकर सर्व अवगुण संपन्न राहुल मिश्र की है। सत्य व्यास जी द्वारा लिखी गयी इस पुस्तक ने दो दोस्तों की दोस्ती और प्यार का सुंदर चित्रण किया है। पुस्तक में बहुत सी घटनाएं और उसका सुंदर व्याख्यान आपको हँसने पर मजबूर कर देगा।

रांची की बेपरवाह ज़िन्दगी को त्याग कर राहुल मिश्र और मोहित पहुंचते हैं... सही पकड़े हैं...दिल्ली। पढ़ाई, जिसमें राहुल मिश्र की कोई रूचि नहीं है, इसे छोड़कर वो रुख करते हैं लड़कियों का, जिसमें उनकी अत्यधिक रूचि है और फिर शुरू होती है ज़िन्दगी की असल आपाधापी। राहुल मिश्र कैसे–कैसे और कहाँ–कहाँ फसेंगे (फसेंगे ये तो तय है) और स्वाभाविक रूप से अपने परम मित्र को फसाएँगे? क्या उन्हें एहसास होगा की संभल जाने में ही भलाई है? क्या उन्हें कभी सच्चा प्यार होगा?

'प्रेम के कारण नहीं होते; परिणाम होते हैं पर प्रेम में परिणाम की चिंता तब तक नहीं होती जब तक देर न हो जाए।'

यह जानने के लिए आपको पढ़ना होगा दिल्ली दरबार। बिहार, झारखंड और यूपी की भाषा में 'खांटी बिहारी' संवाद हैं। मगर यह बात आपको तभी गुदगुदा सकती है यदि आप इस प्रदेश से आते हैं।

कई दिनों तक पिज्जा और पास्ता खाने के बाद लिट्टी चोखा खाने का जो मजा है वही अंग्रेजी नॉवेल्स पढ़ने के बाद ऐसी देशी किताब पढ़ने का है। यह कहानी है राहुल और परिधि के प्रेम की जिसमें रोमांस लबालब भरा है।

लेखन हल्का–फुल्का और मज़ेदार है। कहानी की गति अच्छी है और कई घटनाएं ऐसी हैं जो आपको हँसायेंगी। सभी पात्र और घटनाओं का अपना महत्व है।

डार्क हॉर्स (नीलोत्पल मृणाल)

"जेतना दिन में लोग एमए–पीएचडी करेगा, हौंक के पढ़ दिया तो ओतना दिन में तो आईएसे बन जाएगा।"

नीलोत्पल मृणाल के पहले उपन्यास 'डार्क हार्स' के मुख्य किरदार का यह कथन उन सभी छात्रों की संवेदना को व्यक्त करता है, जो स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के

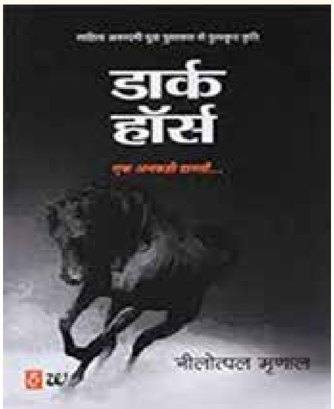

बाद गांव से निकलकर सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए शहरों की ओर जाते हैं। डार्क हॉर्स महज एक उपन्यास भर नहीं है, बल्कि छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का ऐसा दस्तावेज है,जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बीए–एमए–पीएचडी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी खड़े करता है।

डार्क हॉर्स का मुख्य किरदार संतोष बिहार के भागलपुर से सिविल सर्विस की तैयारी के लिए दिल्ली आता है। उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी पट्टी के राज्यों से सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए लड़के या तो इलाहाबाद का रुख करते हैं या तो दिल्ली का। खास तौर से हिंदी माध्यम से तैयारी करने वाले लड़कों के लिए ये दो जगहें ही मख्सूस मानी जाती हैं। जो थोड़े कमजोर घर से होते हैं, वे इलाहाबाद रह कर तैयारी करते हैं, और जो थोड़े साधन–संपन्न होते हैं, वे दिल्ली के मुखर्जी नगर में अपना आशियाना बनाते हैं। साथ ही यह भी कि मुखर्जी नगर में एक इलाहाबाद हमेशा मौजूद रहता है।

डार्क हॉर्स शायद मुख़र्जी नगर से निकले विजय की कहानियों के इतर एक छोटा सा समाज बताता है जो अलग–अलग परिस्थितियों में कैसा है वो दिख रहा है। ये सभी परिस्थितियां तैयारी करने वाले के जीवन में होते बदलाव से आती हैं। इसमें यूपीएससी से जुड़ी हुई सभी सामाजिक आकांक्षाओं को चाहे वो विद्यार्थी की हों या अभिभावक की, दिखाने का प्रयास किया गया है। तैयारी से जुड़े लोगों के सुख–दुःख, घर–बार, मानसिक ऊहापोह, दोस्ती–प्रतिस्पर्धा, मौज और बेबसी सभी का वर्णन मिल जाएगा। अगर आपने कभी किसी भी चीज की तैयारी की है तो आप इस किताब से काफी जुड़ाव महसूस करेंगे और शायद यूपीएससी में प्रयास करने के लिये प्रेरित भी होंगे।

लेकिन ये किताब आईएएस के बारे में नहीं है, मंज़िल के बारे में तो बिलकुल नहीं, ये है उस सफ़र के बारे में जो ये आपसे इम्तेहान लेता है आपकी जवानी, पैसे, संघर्ष और उसके बाद पूरी जिंदगी असफल रहने का ठप्पा। डार्क हॉर्स हम सब तो नहीं होते ना।

इस उपन्यास की सबसे खास बात यह है कि लेखक ने अपने किरदारों की जुबान नहीं काटी है। किरदारों ने जब चाहा, जो चाहा बोल दिया, जैसी गाली देनी चाही, दे दी। लेखक ने ठीक वैसे ही उसे लिख दिया। इसलिए वे शब्द, शिल्प, बिंब आदि के साहित्यक पैमानों से बरी हो जाते हैं। किरदारों के साथ ऐसा इंसाफ यथार्थ लेखन में ही संभव है। वैसे भी नीलोत्पल खुद भी यह दावा करते हैं कि उन्होंने इस उपन्यास के रूप में कोई साहित्य नहीं रचा है,बल्कि उन्होंने जो देखा है, उसे ही अक्षरों, शब्दों और वाक्यों में पिरोकर एक कहानी कह डाली है। इस उपन्यास को पढ़ते हुए, किरदारों के मुंह से 'गंवई गालियों' को सुनते हुए ऐसा नजर भी आया है, जिससे यह कहा जा सकता है कि वह अपने दावे पर खरे उतरे हैं।

और सबसे बड़ी बात यह है कि एक सौ छिहत्तर (176) पेज की यह किताब एक बार में ही खतम हो जाती है।

मनोहर गोयनका
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगमित मुख्यालय

अच्छे मित्र, अच्छी किताबें और साफ अंतःकरणः यही आदर्श जीवन है।

मार्क ट्वेन

चंद्रयान–2 की कहानी

चंद्रयान–2 चंद्रयान–1 के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित दूसरा चंद्र अन्वेषण मिशन है। चंद्रयान–1 को वर्ष 2008 में एक ऑर्बिटर मिशन के रूप में लॉन्च किया गया था जिसका अर्थ है कि चाँद के बारे में सूचना एक ऑर्बिटर के माध्यम से एकत्र की गई थी, जो चंद्रमा के चारों ओर घूमता रहा। उसी साल 2008 में चन्द्रयान–2 को भी भारत सरकार से स्वीकृति मिली थी। 11 साल बाद चंद्रयान–2 मिशन का सपना एक सच्चाई के रूप में सामने आया। यह मिशन एक ऑर्बिटर मिशन होने के साथ साथ एक लैंडिंग मिशन का भी संयोजन था। लैंडिंग मिशन में नरम लैंडिंग के माध्यम से और बाद में रोवर की मदद से चंद्र सतह की जाँच करने का ईरादा था। इस पूरे मिशन का मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य चंद्र सतह संरचना में बदलावों का मानचित्रण और अध्ययन करना है और साथ ही साथ चाँद पे पानी की सम्भावनाओं को टटोलना भी है।

भारत इस मिशन के साथ चाँद पर उतरने वाला चौथा देश बनता, और साथ ही यह चाँद के दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र में उतरने वाला पहला देश बन जाता। चाँद का दक्षिण ध्रुव विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि चंद्र सतह का क्षेत्र यहाँ सूर्य की रोशनी से दूर छाया में रहता है

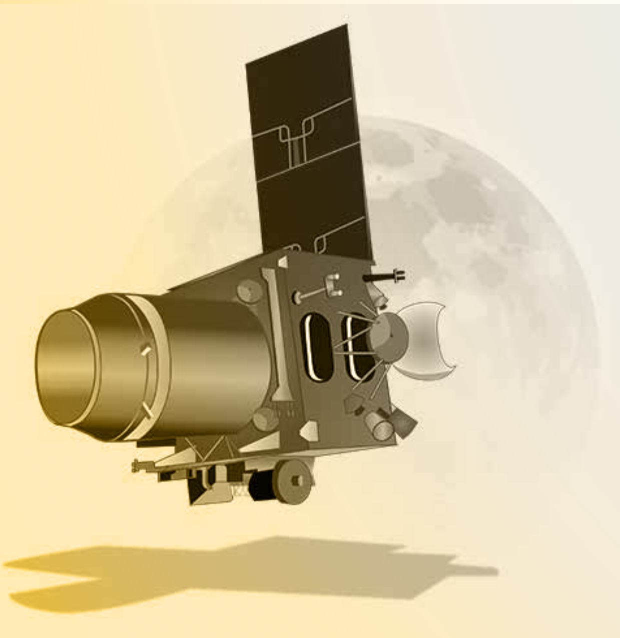

आर्बिटर

और छाया का यह क्षेत्र उत्तरी ध्रुव की तुलना में बहुत बड़ा है। इसी वजह से इसके चारों ओर स्थायी रूप से पानी की उपस्थिति की संभावना है। इसके अलावा इस दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में क्रैटर ठण्ड की वजह से प्रारंभिक सौर मंडल का जीवाश्म रिकॉर्ड का खज़ाना होने की भी सम्भावना है।

पहले इस मिशन को रूसी अंतरिक्ष एजेंसी और इसरो के साथ संयुक्त मिशन के तौर पर शुरु किया गया था, पर बाद में रूसी अंतरिक्ष एजेंसी अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के कारण मिशन से हट गई। इस तरह चंद्रयान–2 एक 100% भारतीय अंतरिक्ष मिशन बना।

इस मिशन को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से 22 जुलाई 2019 को जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (जीएसएलवी एमके III) द्वारा लॉन्च किया गया था। यान 20 अगस्त 2019 को चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा और फिर इसके बाद विक्रम लैंडर की लैंडिंग के लिए ऑर्बिटल पोज़ीशनिन्ग कदम (Orbital Positioning Manoeuvres) शुरू किए गये। प्रज्ञान रोवर के साथ विक्रम लैंडर 7 सितंबर 2019 को चंद्रमा पर उतरने वाला था, लेकिन चंद्रमा की सतह से लगभग 2.1 किलोमीटर ऊपर लैंडर के साथ इसरो का संपर्क टूट गया। इसरो के बाद के बयानों से यही महसूस होता है कि चंद्रमा की सतह पर लैंडर तेज़ी से उतरा। हालांकि इस दुर्घटना के प्रभाव से शायद विक्रम लैंडर बच गया, लेकिन विक्रम लैंडर के साथ संपर्क फिर से जुड़ नहीं सका।

लेकिन केवल लैंडिंग भाग के साथ मिशन की सफलता को देखना इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा की गई पूरी मेहनत के लिए एक अन्याय होगा। आठ वैज्ञानिक उपकरणों के साथ ऑर्बिटर, अभी भी चंद्रमा की कक्षा में मुस्तैदी से घूम रहा है और सार्थक जानकारी को रिले कर रहा है। इसके अलावा ऑर्बिटर के एक साल के जीवन की परिकल्पना के बजाय अब 7 साल से भी ज्यादा जीवित रहने की उम्मीद है, जिसका अर्थ है कि हमारे प्यारे चाँद के बारे में 7 गुना अधिक जानकारी। ऑर्बिटर कैमरा अब तक के किसी भी चंद्र मिशन में उच्चतम रिज़ॉल्यूशन कैमरा (0.3m) है, जिसके चलते यह उच्च रिज़ॉल्यूशन की छवियां प्रदान करेगा जो वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के लिए बेहद उपयोगी

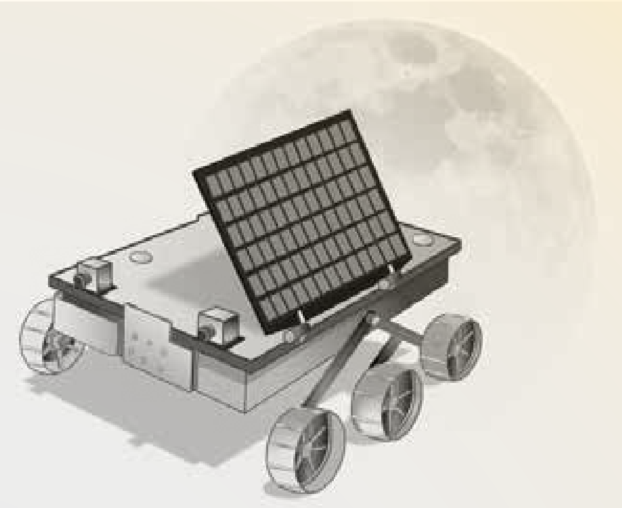

प्रज्ञान रोवर

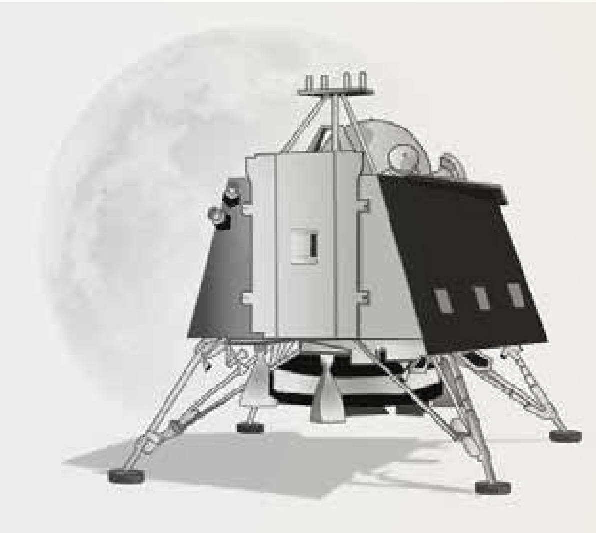

विक्रम लैंडर

होगा। इसरो के एक आधिकारिक बयान के अनुसार, मिशन ने 90–95% मिशन के उद्देश्यों को पूरा किया है।

हमें इसरो के वैज्ञानिकों पर गर्व होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने ही हमें विश्वास दिलाया कि हम वास्तव में चंद्रमा तक पहुंच सकते हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ पूरे मिशन के लिए मेरी भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं:

2008 में एक सपना था देखा,
छूएंगे उसे जो अब तक था अनदेखा,
हमें गर्व है उन वैज्ञानिको पे,
जिन्होंने चन्द्रयान–2 की खींची रूपरेखा।

चाँद को छूने की आशा दी,
उससे गुफ्तगू करने की भाषा दी,
हमें गर्व है उन वैज्ञानिको पे,
जिन्होंने दृढ़ निश्चय की परिभाषा दी।

चाँद को जानने की कोशिश अपनी जारी है,
अब सूरज को जानने की अगली अपनी बारी है,
हमें गर्व है उन वैज्ञानिको पे,
जिनकी अब गगनयान और आदित्य मिशन की
तैयारी है,
हमें गर्व है उन वैज्ञानिको पे,
जिनकी जंग हर दम चाँद तारों में जारी है,
हमें गर्व है उन वैज्ञानिको पे,
जिन्होंने अनुसंधान को दी ज़िंदगी अपनी सारी है।

सिमरदीप सिंह
उप प्रबंधक (वित्त)
आरईसी निगमित मुख्यालय

सबसे खूबसूरत

सबसे खूबसूरत वो समुद्र है
जो अभी तक देखा नही गया है।

सबसे खूबसूरत वो बच्चा है
जो अभी तक पैदा नही हुआ है।

सबसे खूबसूरत वो फूल है
जो अभी तक खिला नही है।

सबसे खूबसूरत वो सुबह है
जो अभी आने वाली है।

सबसे खूबसूरत वो शब्द हैं
जो अभी कहे जाने हैं।

और सबसे खूबसूरत वो सन्देश हैं
जो अभी दिए जाने बाकी हैं।

धारा 370 हटने के बाद मेरी कश्मीर यात्रा

सितंबर माह में मुझे अपने परिवार सहित कश्मीर जाने का अवसर मिला। ये भी कह सकते हैं कि चूंकि मैने तीन माह पहले ही जून महीने में फ्लाइट की टिकटें बुक करवा रखी थीं इसलिए मुझे जाना पड़ा क्योंकि अगर यह बुकिंग रिफंडेबल होती तो मुझे यह खास मौका नहीं मिलता। मेरे जाने के ठीक पंद्रह–बीस दिन पहले कश्मीर से धारा 370 हटाई गई थी। इसलिए मैं और मेरे परिवार वाले काफी चिंतित थे कि हम नहीं जा पाएंगे क्योंकि कश्मीर में सुरक्षा कारणों से फोन और इन्टरनेट सेवाएं बंद कर दी गई थीं। जाने से पहले जिस हाउसबोट वाले से मेरी बात हुई थी मैं उससे भी बात नहीं कर सकता था न ही दिल्ली से एडवांस बुकिंग कर पा रहा था। मेरे जानने वाले ज़्यादातर लोग मुझे कश्मीर जाने से रोक रहे थे। मीडिया से भी इस बारे में कुछ खबरें नहीं आ रही थीं कि वहाँ का माहौल कैसा है? हमारा सहारा बस डीडी न्यूज था जिससे हमारे अंदर एक उत्साह बना हुआ था। हर तरफ से खबरे आ रही थीं कि धारा 370 हटने के बाद कश्मीर में टूरिस्ट नहीं जा रहे हैं। मेरे मन में डर बना हुआ था और अजीब से खयालात आ रहे थे। मेरे टिकट व्योमकेश सर ने बुक की थी मैंने अंत में उनसे ही फाइनली पूछा कि सर जाना ठीक रहेगा? उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाते हुए कहा कि आप बिल्कुल जाइए। वहां सब प्रशासन के कंट्रोल में है। आप घूम कर आइए। उनकी बातें सुनकर मुझे कुछ तसल्ली हुई। मेरे परिवार वाले बिल्कुल घबराए हुए थे और जाने से मना कर रहे थे। मेरी फ्लाइट की टिकट 31,000 रूपए की थी और कैंसिल करवाने में कुछ भी रिफंड नहीं मिलता। हमारी Flight 07 सितंबर को थी और हमने भगवान का नाम लेकर श्रीनगर की फ्लाइट पकड़ ली। हम दोपहर करीब बारह बजे श्रीनगर एयरपोर्ट पहुंचे। मैंने श्रीनगर एयरपोर्ट पर टैक्सी वाले से कहा कि किसी हाउसबोट या होटल में ले चले। उसने कहा कि सर आप चिंता मत करें मेरी खुद की हाउसबोट है, यह सुनकर मन खुश हो गया। श्रीनगर एयरपोर्ट से हमारे हाउसबोट की दूरी लगभग 18 किलोमीटर थी। मैंने पाया कि श्रीनगर में सिर्फ दस से पंद्रह प्रतिशत टूरिस्ट थे। हम तीन दिन कश्मीर में रहे और मुझे यहां का माहौल बिल्कुल शांत दिखा। कहीं भी डरने जैसी कोई बात नहीं थी।

हाउसबोट में रहने का आनंद ही कुछ और था। मुझे और मेरे परिवार वालों को डल झील में बहुत मजा आया। सुबह और शाम को हाउसबोट में बैठ कर कश्मीरी कहवा और ग्रीन टी पीने का अलग ही आनंद था। सुबह और शाम को डल झील में ठंडी हवाएं चलती थीं वह बेहद ही सुकून भरा समय होता था

जिससे हमारा शरीर और चित्त शांत हो जाता था। मेरे परिवार के लोग भी प्रसन्न थे। हम सभी सुबह और शाम को डल झील के किनारे टहलते थे। शाम को चाट पकौड़े, कबाब, छोले, कुल्चे, सब्जी और फल की कुछ दुकानें खुलती थीं तो हम वहीं कुछ खा पी लेते थे। हमने श्रीनगर में शंकराचार्य का मंदिर देखा जो बहुत ऊंचाई पर स्थित है। वहां से पूरा श्रीनगर का नजारा बहुत ही खूबसूरत दिखायी देता है। मुझे पता चला कि पूरे डल झील में करीब 1500 हाउसबोट हैं। कश्मीर के हाउसबोट में रहने वालों लोगों का जीवन भी बहुत अजीब सा है। यहां हाउसबोट में ही मीना बाजार है जहां शाल, जैकेट, कपड़े, ड्राई फ्रूट, केसर, अखरोट और लकड़ी बहुत सुंदर सामान मिलता है।

श्रीनगर में हमने नेहरू पार्क भी देखा जहां पर तरह–तरह के फूल खिले थे। यहां हम ट्यूलिप गार्डन नहीं देख सके क्योंकि वह बंद था। ट्यूलिप फूलों के खिलने का सीजन मार्च और अप्रैल में होता है। हम कश्मीर पहुँचने के अगले दिन सोनमर्ग और गुलमर्ग देखने गए। श्रीनगर से जब हम सोनमर्ग की ओर जा रहे थे तो रास्ते में धान के बहुत सारे खेत दिखे। कश्मीर बहुत ही खूबसूरत है तभी तो इसको धरती का स्वर्ग भी कहते हैं। हमें जगह–जगह सेब के बगीचे और अखरोट के पेड़ भी दिखे। जब हम सोनमर्ग पहुंचे तो उसकी खूबसूरती देखकर दंग रह गए। बर्फ के ऊंचे–ऊंचे शिखर, हरे–भरे जंगल, शोर मचाती हुई नदी का दृश्य अद्भुत था। यहाँ हमने घुड़सवारी करने का भी आनंद लिया कुल 14 किलोमीटर की घुड़सवारी की। घोड़ेवाले ने हमें बताया कि सोनमर्ग में वहीं पर बजरंगी भाईजान, और सत्ते पे सत्ता फिल्म की शूटिंग हुई थी। सोनमर्ग श्रीनगर से 90 किलोमीटर दूर है। यहीं से आगे पवित्र अमरनाथ की गुफा, कारगिल और लद्दाख का रास्ता गया है। तीसरे दिन हम गुलमर्ग देखने गए। गुलमर्ग श्रीनगर से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर है। गुलमर्ग की अपनी खूबसूरती है यहां हमने राजा का पैलेस भी देखा जो अंदर से बहुत ही खूबसूरत था जिसे सरकारी होटल बनाने की बात चल रही है। यहां पर गंडोला भी है जिससे पूरा गुलमर्ग ऊपर से नजर आता है पर दुर्भाग्य से टूरिस्ट न होने से वह बंद था।

हमारे हाउसबोट में लैंडलाइन फोन की सुविधा थी हम यहीं से अपने घर फोन कर लेते थे।

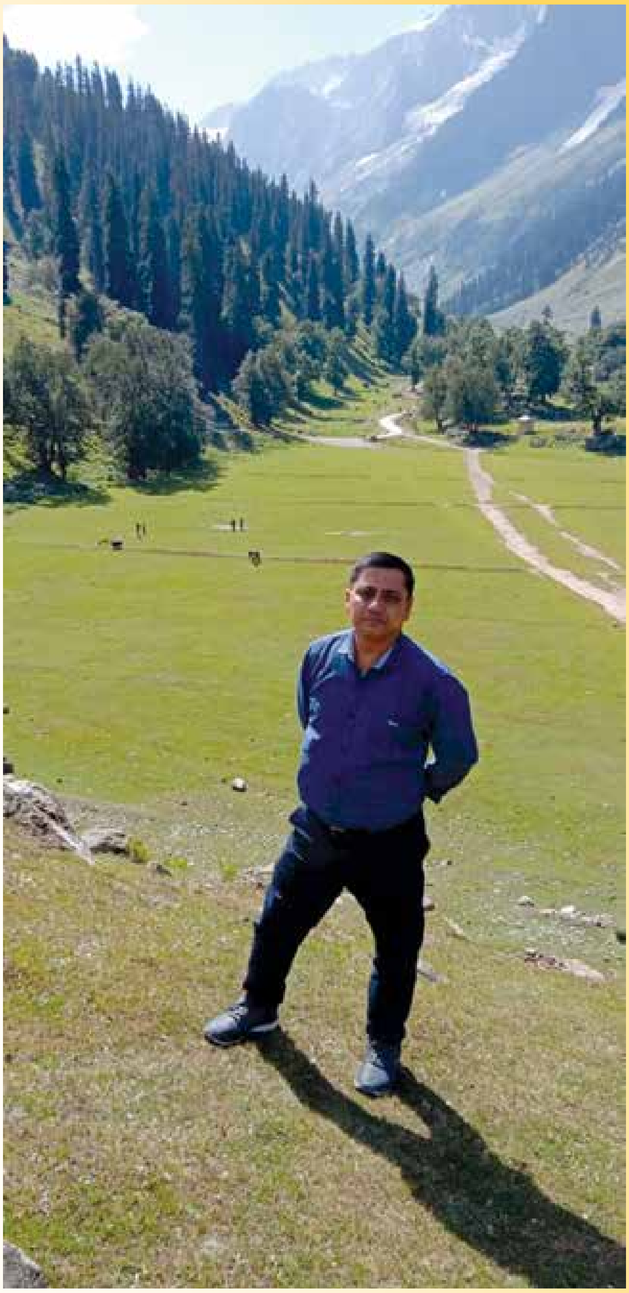

हम खुश थे क्योंकि जब हम कश्मीर जाने की सोच रहे थे तब और अब में कश्मीर ऐतिहासिक रूप से बदल चुका था। हम लोग खुश थे क्योंकि हम अब घर वापस आ रहे थे और हमारे साथ एक ऐसी जगह की यादें थीं जिसके के बारे में कहा गया है:

'गर फिरदौस बर रूये ज़मीं अस्त। हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त'।
(धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यही हैं।)

देवेन्द्र कपूर
प्रवर श्रेणी लिपिक
आरईसी निगमित मुख्यालय

इलेक्ट्रिक वाहन: चुनौतियां और अवसर

भारत में मिश्रित प्रकार की परिवहन व्यवस्था प्रचलित है जहां एक हाथ मोटर गाड़ी, बैलगाड़ी, साइकिल, और ट्रैक्टर जैसे पारम्परिक वाहनों के साथ साथ आधुनिक बसें, ट्रेन, कार और मेट्रो परिवहन के साधन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। भारत दुनिया का सबसे तेजी से विकसित होता ऑटोमोबाइल बाजार है। यहां हर साल करीब 4 मिलियन से अधिक पैसेंजर कारों की बिक्री होती है, परन्तु जितने अधिक वाहन उतनी ही अधिक इनसे जुड़ी समस्याएं भी हैं। वायु प्रदूषण और ईंधनों के बढ़ते दाम सबसे आगे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मुताबिक दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 13 शहर भारत के हैं और इनमें सबसे प्रदूषित शहर दिल्ली है। जिस तरह भारत में पेट्रोल और डीजल की गाड़ियों से प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है उस लिहाज से अब वैकल्पिक ईंधन भविष्य की सबसे बड़ी जरूरत बनने वाला है।

ताजा आंकड़ों के अनुसार अभी दुनिया भर की सड़कों पर लगभग 120 करोड़ कारें दौड़ रही हैं। एक और रिपोर्ट के अनुसार 2035 तक इनकी संख्या 200 करोड़ तक पहुंचने वाली है। वैज्ञानिकों का ऐसा मानना है कि हमें पर्यावरण को बचाना है तो इन वाहनों से होने वाले कार्बन एमिशन को 80% तक कम करना होगा। विश्व के लिए चुनौती बनते जा रहे प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए इलेक्ट्रिक वाहन सबसे बड़ा कदम है।

पहली इलेक्ट्रिक कार का आविष्कार 1832 से 1839 के बीच स्कॉटिश आविष्कारक रॉबर्ट एंडरसन ने नॉन रिचार्जेबल प्राइमरी सेल से चलने वाला इलेक्ट्रिक कैरिज बना कर किया था। थॉमस अल्वा एडिसन ने पावरफुल बैटरी वाले इलेक्ट्रिक कार बनाने का मिशन 1899 में शुरू किया था परन्तु यह मिशन पूरा नहीं हुआ। कमर्शियल स्केल पर 2008 में टेस्ला मोटर्स ने टेस्ला रोडस्टर मॉडल वाली इलेक्ट्रिक कारों को सड़क पर उतारा। लिथियम आयन बैटरी से चलने वाली यह पहली सफल कार थी। एक बार चार्ज करने के बाद लगभग 300 किलो मीटर तक चलने वाली इस मॉडल की लगभग 2500 कारें लगभग 30 से अधिक देशों में बेची गईं। जुलाई 2009 में मित्सुबिशी (Mitsubishi) ने इलेक्ट्रिक कार का आईएमआईईवी (iMiEV) मॉडल जापान में उतारा। इसके बाद कई कंपनियों ने अपने इलेक्ट्रिक मॉडल के साथ–साथ हाइब्रिड मॉडल भी बाजार में उतारे जो बिजली के साथ साथ पेट्रोल डीजल जैसे परंपरागत ईंधन पर भी चलते हैं।

भारत में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की यात्रा की शुरूआत 2013 में भारत सरकार की ओर से राष्ट्रीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन प्लान की घोषणा से हुई जिसमें उद्योग के योगदान सहित 14 हजार करोड़ रूपये का बजट रखा गया। वर्ष 2020 तक हाईब्रिड/ इलेक्ट्रिक वाहन बिक्री का महत्वाकांक्षी लक्ष्य 60–70 लाख रखा गया है। भारत सरकार ने अपनी मंशा जता दी है कि 2030 तक भारतीय कार बाजार में केवल इलेक्ट्रिक कारें ही बेचीं जा सकेंगी। इसके इस्तेमाल से पेट्रोल और डीजल पर निर्भरता खत्म होगी। अगर यह संभव है तो कार्बन उत्सर्जन का एक बड़ा हिस्सा कम हो जायेगा। दरअसल नीति आयोग का लक्ष्य साल 2023 तक सभी तीन–पहिया वाहन को इलेक्ट्रिक वाहन में बदलना है। वहीं, 2025 तक 150 सीसी से कम वाली बाइक या स्कूटर को इलेक्ट्रिक वाहन में बदलना है।

ई–वाहनों को आकर्षक बनाने के लिए लोगों को आर्थिक प्रोत्साहन भी दिया जा रहा है। 2019 के बजट में ई–वाहनों के लिए जीएसटी की दर वर्तमान के 12 फीसदी से घटाकर 5 फीसदी करने की बात कही गई है। ई–वाहनों के कुछ कलपुर्जों पर आयात शुल्क में भी छूट मिली है। ई–वाहनों की खरीद के लिए ऋण के ब्याज पर आयकर में भी छूट का प्रावधान है। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की नीति के तहत हाल ही में सरकार ने फेम (FAME) II कार्यक्रम को मंजूरी दी है।

भारत हर साल करीब 1 लाख 70 हजार करोड़ रुपये का क्रूड ऑयल आयात करता है इसमें कमी लाने की जरुरत है। भारत को कठिन परिश्रम करना चाहिए, ताकि नियत समय पर हमारे तिपहिया, चार पहिया और बसें सभी इलेक्ट्रिक वाहनों में तब्दील हो जाएं। सरकार इस दिशा में काम कर रही है, लेकिन इसमें और तेजी लाने की जरूरत है। देश में गहराई तक जड़ें जमा चुके कंबशन इंजन की जगह पर इलेक्ट्रिक ट्रेन इंजन का आना एक बड़ा परिवर्तन है।

एक अप्रत्याशित बदलाव बैट्री से चलने वाले ई–रिक्शा

के रूप में सफल रहा है। इन सस्ते जीरो एमीशन पब्लिक व्हीकल्स ने ऑटोरिक्शा के निर्माताओं को अस्थिर करते हुए इसी राह पर आगे बढ़ने के लिए विवश कर दिया है।

भारत एक विशाल देश है और यहां ईंधन मुहैया कराने वाले करीब 62,000 रिटेल आउटलेट (पेट्रोल पंप) हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, उसके अनुकूल इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की आवश्यकता है जिसकी भारत में खासी कमी है। इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे बैटरी चार्जिंग या बैटरी बदलने संबंधी बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी जहां पर्याप्त संख्या में वाहन आएं जिससे कि ये व्यवस्था आर्थिक तौर पर सक्षम हो। जब तक पर्याप्त मात्रा में चार्जिंग स्टेशनों का विकास नहीं होगा, तब तक इसकी बिक्री को गति नहीं मिलेगी।

हालांकि सरकार ने 2030 तक सभी पारम्परिक वाहनों के स्थान पर इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की बात कही है, परन्तु निर्माताओं ने बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रिक कारों के विकास और निर्माण के लिए आवश्यक निवेश की घोषणा नहीं की है। अभी तक देश में लांच हुई ई–कारों की कीमतें सामान्य रूप से काफी ज्यादा हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों में सबसे अधिक लागत उसकी बैटरी पैक की होती है। वर्तमान में इन्हें विदेशी बाजारों से आयात किया जा रहा है। इस स्थिति में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में किसी प्रकार का तनाव, हमारे बाजार को भी प्रभावित कर सकता है, जैसा कि, पेट्रोल और डीजल के मामले में देखा जा रहा है। नीति आयोग का मानना है कि अगले तीन–चार वर्षों में बैटरी सस्ती होने पर ई–कारों की लागत भी पेट्रोल और डीजल इंजन वाली कारों के बराबर हो जाएगी। ईवी बैटरियों का उत्पादन भारत में ही करना होगा ताकि ईवी को सस्ता बनाया जा सके। सुजुकी ने गुजरात में लिथियम आयन बैटरी बनाने के लिए तोशिबा और डेन्सो के साथ एग्रीमेंट किया है। उम्मीद है इससे अन्य कंपनियां भी प्रभावित हो कर भारत में इनका उत्पादन प्रारम्भ करेंगी। एमजी मोटर्स, मारुति, टाटा, रेनो और टोयोटा भारतीय बाजार में किफायती कारें पेश करने की संभावनाएं तलाश रही हैं।

केवल भारत ही नहीं दुनिया के दूसरे देश भी पेट्रोल डीजल पर चलने वाले कारों की बिक्री रोकना चाहते हैं। नॉर्वे 2025 तक पेट्रोल डीजल कारों की बिक्री बंद करना चाहता है वहीं जर्मनी ने 2030 और यूके (UK) ने 2040 तक केवल इलेक्ट्रिक कारों को ही लागू करने का लक्ष्य रखा है।

इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देकर हम कच्चे तेल की खपत में भारी कमी लाकर आयात बिल को कम कर सकते हैं तभी जाकर गल्फ देशों के बंधन से भारत आजाद हो सकेगा और इसके साथ ही हम पेरिस समझौते के तहत 35 फीसदी प्रदूषण घटाने के लक्ष्य को भी पूरा कर सकते हैं। यह सपना तभी साकार हो सकता है, जब सरकार, निर्माता और खरीदार एक साथ इसे बाज़ार के अनुकूल बनाने के लिए काम करें।

मोनिका प्रियदर्शिनी
सहायक प्रबंधक (इंजीनियरिंग)
आरईसी निगमित मुख्यालय

मुंबई की सड़कों पर दौड़ती इलेक्ट्रिक बस

भारतीय सिनेमा के सौ साल – एक दिलचस्प सफ़र

सिनेमा, भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं और आम जनता पर इसका गहरा प्रभाव रहा है। भारतीय सिनेमा का सौ साल से लंबा सफ़र बेहद दिलचस्प रहा है। जितना प्रभावित सिनेमा ने जनता को किया है, शायद उतना ही प्रभाव समाज का सिनेमा पर भी रहा है। कई सालों से यह मास कम्युनिकेशन का सशक्त माध्यम हैं। मनोरंजन के साथ साथ अपने विचारों को व्यक्त करने का शक्तिशाली साधन है।

मनोरंजन के माध्यम के रूप में सिनेमा को देश में अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल है और सिनेमा की लोकप्रियता का इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ सभी भाषाओं में मिलाकर प्रति वर्ष 1,600 तक फिल्में बनी हैं। भारतीय सिनेमा ने 20वीं सदी की शुरुआत से ही विश्व के चलचित्र जगत पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। यदि हम भारतीय सिनेमा का इतिहास देखें तो पता चलता है कि समय समय पर इसने सामाजिक बुराइयों को उजागर किया हैं और कुरीतियों पर लोगों को आईना दिखाया है, जैसे की 'सुजाता'–जिसमे छूआछूत जैसे गंभीर विषय पर एक मनोरंजन, जिसने लोगों को झकझोर कर रख दिया था। इसी तरह 'मदर इंडिया', 'दो आखें बारह हाथ' जैसी फिल्मों ने कई ज्वलंत मामले उठाए। सत्यजित रे, अपर्णा सेन, विशाल भारद्वाज, दिवाकर बेनर्जी जैसे निर्देशकों की फिल्मों का प्रभाव अभी तक देखा जा सकता है। आम जनता फिल्में देखती है, सराहती है, पर इसके इतिहास से अनभिज्ञ है। यह इतिहास नेशनल म्यूज़ियम ऑफ इंडियन सिनेमा में दिखाया गया है।

दक्षिण मुंबई में एक भव्य इमारत है – गुलशन महल। किसी वक्त यह इमारत कव्वालियों तथा सांस्कृतिक सभाओं के लिए प्रसिद्ध थी। इस इमारत को हाल ही में नेशनल म्यूज़ियम ऑफ इंडियन सिनेमा (NMIC) में तब्दील कर दिया गया है। इस फिल्मी हब को आधुनिक तरह से परिवर्तित किया गया है और यह सभी सुविधाओं से परिपूर्ण है। इस म्यूज़ियम में चार प्रदर्शनी हाल है – गांधी एंड सिनेमा, टेक्नॉलॉजी क्रिएटिविटी एंड इंडियन सिनेमा, सिनेमा अक्रॉस इंडिया एवं चिल्ड्रेन फिल्म। इसके अतिरिक्त यहां, 'सिनेमा का उद्‌गम', 'भारत मे सिनेमा का पदार्पण', 'भारतीय मूक फिल्में', 'सिनेमा में आवाज का आगमन', द्वितीय विश्व युद्ध का सिनेमा पर प्रभाव', 'न्यू वेव', इत्यादि का अलग–अलग खंड है। यह म्यूज़ियम भारतीय सिनेमा के सौ साल से लंबे अतीत को दर्शाने का अद्‌भुत प्रयास करता है।

हम सब फिल्म देखने सिनेमा हाल तो जाते ही रहते हैं लेकिन मेरी राय में किसी भी कला के इतिहास को समझे बिना उस कला की समझ अधूरी है। इसलिए मैं फिल्म नगरी मुंबई में बने इस म्यूज़ियम में गयी। सफर की शुरुआत पुराने समय में इस्तेमाल होने वाली छवियों को चलाने की प्रारंभिक तकनीकों से हुई जिसमें से शायद बायोस्कोप का नाम आपने सुना होगा। फिर मूक फिल्मों का दौर आया जिसमें 1913 में बनी दादासाहेब फाल्के की 'राजा हरिश्चन्द्र' पहली फिल्म थी जिसमें पूरा कर्मीदल भारतीय था। लगभग दो दशक बाद 1931 में पहली बोलने वाली फिल्म 'आलमआरा' आई। फिर 1937 में पहली कलर फिल्म 'किसान कन्या' आई जिसमें एक गरीब किसान की ज़िंदगी के कष्टों को दिखाया गया। जैसे जैसे आप इस सफर में आगे बढ़ेंगे, आप देखेंगे की तकनीकों में कई महत्त्वपूर्ण बदलाव आए। साथ ही वैश्विक कतार पर हो रहे बदलावों का असर भारतीय सिनेमा पर भी हुआ। उदाहरण के रूप में फ्रेंच सिनेमा के न्यूवेल वेग (Nouvelle Vague) फिल्म्स के प्रभाव से इंडिया में न्यू वेव (New Wave) सिनेमा

आया जिसमें राजनीतिक रूप से प्रासंगिक फिल्में आईं जैसे मणि कौल की 'उसकी रोटी', बासु चैटर्जी की 'सारा आकाश' और मृणाल सेन की इंटरव्यू। आप यह भी देखेंगे की भारतीय साहित्य से भी इंडियन सिनेमा ने प्रेरणा ली। शरत चन्द्र की 'देवदास' को तो कई बार और कई भाषाओं में फिल्माया गया है। साथ ही बॉलीवुड के समानान्तर धारा पर भी एक भाग है, जहां सईद मिर्ज़ा की 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है', गोविंद निहलानी की 'अर्ध सत्य' और केतन मेहता की 'मिर्च मसाला' जैसी फ़िल्मों का उल्लेख है।

यह म्यूज़ियम, ना सिर्फ़ सिनेमा प्रेमियों के लिये एक रोचक जगह है, परन्तु प्रौद्योगिकी, इतिहास, कला और राजनीति में दिलचस्पी रखने वालों के लिये भी एक बहुत अविस्मरणीय अनुभव है। म्यूज़ियम बड़ा होने के बावजूद हमें कभी भी उबाऊ तथा थकान महसूस नहीं हुई। आप जब भी मुंबई जाएं, इस म्यूजियम के सफर से वांछित न रहें।

तन्वी सिंघल
सहायक प्रबंधक (सीसी–पीआर)
आरईसी निगमित मुख्यालय

किताबें!

किताबें झाँकती हैं बंद आलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं।
महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं,
जो शामें इन की सोहबत में कटा करती थीं।
अब अक्सर ....
गुज़र जाती हैं 'कम्प्यूटर' के पदों पर।
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें ....
इन्हें अब नींद में चलने की आदत हो गई है
बड़ी हसरत से तकती हैं,
जो क़दरें वो सुनाती थीं,
कि जिनके 'सेल' कभी मरते नहीं थे,
वो क़दरें अब नज़र आतीं नहीं घर में,
जो रिश्ते वो सुनाती थीं।
वह सारे उधड़े–उधड़े हैं,
कोई सफ़ा पलटता हूँ तो इक सिसकी निकलती है,
कई लफ़्ज़ों के मानी गिर पड़े हैं।
बिना पत्तों के सूखे ठूँठ लगते हैं वो सब अल्फ़ाज़,
जिन पर अब कोई मानी नहीं उगते,
बहुत–सी इस्तलाहें हैं,
जो मिट्टी के सकोरों की तरह बिखरी पड़ी हैं,
गिलासों ने उन्हें मतरूक कर डाला।
जुबान पर ज़ायका आता था जो सफ्हे पलटने का,
अब ऊँगली 'क्लिक' करने से बस इक,
झपकी गुज़रती है,
बहुत कुछ तह–ब–तह खुलता चला जाता है परदे पर,
किताबों से जो ज़ाती राब्ता था, कट गया है।

गुलजार

मध्यवर्गीय परिवार के सपने

सपने हम सभी देखते हैं, सपने देखने की कोई उम्र नहीं होती है और ना ही कोई सीमा, वो जात–पात, ऊंच–नीच के अंतर से प्रभावित नहीं होती है। सपने ऐसे होते हैं, जो निरंतर हमारी सोच को प्रबलता प्रदान करती है और हमें हमेशा प्रेरित करती हैं, उन लक्ष्यों को हासिल करने में जो हम करना चाहते हैं और उसे प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यह सपने कभी–कभी हमारी वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित तो होती हैं परंतु हार नहीं मानती हैं और हमारी आकांक्षाओं को एक दिशा देने में लग जाती हैं। इन सभी सपने देखने वाले और उनको पाने वालों में, एक खास वर्ग का उल्लेख करना जरूरी है।

भारत विविधताओं से भरा देश है और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में उभरता हुआ प्रगतिशील देशों में गिना जा रहा है। उसी अर्थव्यवस्था के पैमाने में व्यक्तियों, परिवारों को उनके आय के आधार पर अलग–अलग श्रेणी में रखा गया है। इस श्रेणी में मध्यम वर्ग एवं निम्न मध्यम वर्गीय परिवार आते हैं। भारत देश में एक बड़ा तबका मध्यम वर्गीय श्रेणी में आता है और जैसे–जैसे गरीबी रेखा से नीचे रहने वालो की संख्या कम हो रही है और मध्यम वर्गीय परिवार की संख्या बढ़ती जा रही है।

मध्यम वर्गीय परिवार के सपने देखने में, सोचने में साधारण होते हैं परंतु इनका महत्व बहुत ही ज्यादा है और आगे उनकी उंचाईयां अलग ही मार्ग खोलती हैं। यह सपने कभी उनकी आवश्यकताएं होती हैं तो कभी उनकी आकांक्षाओं और क्षमताओं को प्रकट करती हैं। यह मोटर साईकल से कार तक, बस से लेकर हवाई जहाज तक, अंग्रेजी मीडियम के स्कूल से लेकर अखिल भारतीय और विश्वस्तरिय विश्वविद्यालयों/संस्थानों तक पहुंचने का सपना संजोए हुए हैं। अभावों के बीच और सीमित संसाधनों के साथ, उन लक्ष्यों को हासिल करने की तैयारी करना, बड़े धैर्य और कठिन परिश्रम के साथ चरणबद्ध तरीके से रणनीती बनाना, उन सपनों के लिए उठाए गये कदमों को दर्शाता है। कभी–कभी उन सपनों के लिए कई सुविधाओं और इच्छाओं का भी त्याग करना होता है। बहुत ही साहस और एकाग्रता के साथ विषम परिस्थितियों में भी लक्ष्य का पीछा करते हैं और हार नहीं मानते

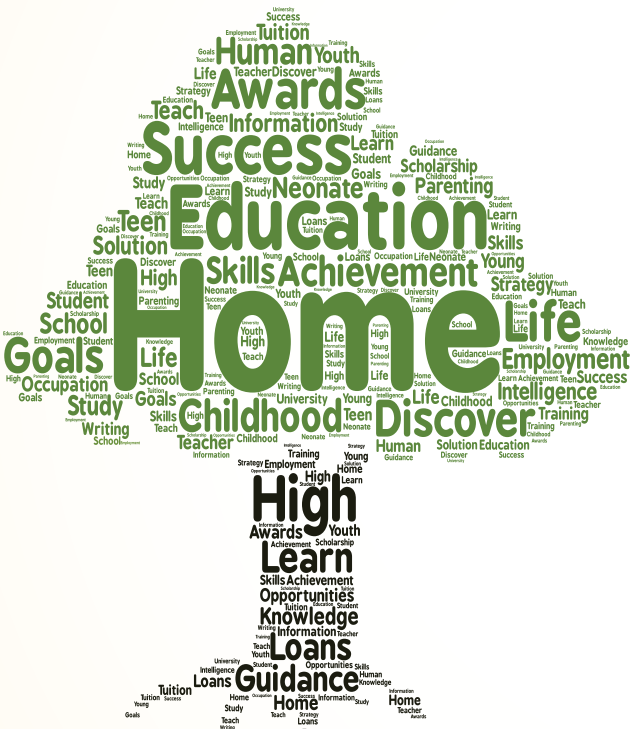

हैं। परिवार में एक व्यक्ति के सपने के लिए पूरा परिवार एक साथ हो जाता है और व्यक्तिगत इच्छा और आकांक्षा परिवार के एक हर सदस्य का सपना बन जाता है।

इन परिवारों के अथक प्रयास और आपस में बेशर्त सहयोग से ही एक लक्ष्य को, एक सपने को हकीकत में तबदील करते हैं। एक लक्ष्य हासिल होने के बाद भी रूकना और अपने सपने की ओर बढ़ना, इनकी विशेषता है। इन

मध्यम और गरीब परिवारों के इसी जिद्द के कारण इनकी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और विचारवादी व्यवस्था में काफी सुधार और तरक्की (विकासद्ध आया है।

हमने अपने समाज में, देश–प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक, राजनितिक, कला, बिजनेस एवं खेल में सफल हुए व्यक्तियों एवं लोगों की जीवनी और आत्मकथा से भी उनके संघर्षो और सफलता की कहानी से भी समझ सकते हैं। हाल के दिनों में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों और मैगजीनों में एक पेज इस तरह के खबरों को उजागर करती है। कई टेलीविजन के सीरियल में, वास्तविक जीवन पर आधारित कई कार्यक्रमों में, इसी विचार–धारा/सोच को केंद्रित कर प्रतिभाओं को दिखाया जाता है।

वास्तव में भारत में हुए विकास, सामाजिक एवं आर्थिक बदलावों में मध्यम वर्ग के लोगों का अतुलनीय योगदान है। इस वर्ग से आए प्रतिभाशाली और सफल व्यक्तित्व ने अपनी पहचान देश में, विश्व में, राजनीति में, समाज में, कला में, तकनीकी में, अर्थव्यवस्था में, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में दिखाया है। हमें इस उपलब्धि पर हमेशा गर्व होना चाहिए और इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि यह हमारी क्षमता और विशेषता को उल्लेखित करता है। अंत में पूर्व राष्ट्रपति और रक्षा वैज्ञानिक अब्दुल कलाम आजाद के प्रेरणादायिक पंक्तियां समर्पित हैं :–

सपने वो होते हैं जो जागती आंखों से देखते हैं,
सोते हुए सपने सब देखते हैं।

संतोष कलिहारी
सहायक प्रबंधक (इंजीनियरिंग)
आरईसी निगमित मुख्यालय

सबसे खतरनाक...

मेहनत की

लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती
बैठे–बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है
सहमी–सी चुप में जकड़े जाना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता
कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है
जुगनुओं की लौ में पढ़ना
मुट्ठियां भींचकर बस वक्त निकाल लेना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता

सबसे ख़तरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना
सब कुछ सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना।

अवतार सिंह संधू 'पाश',
पंजाबी कवि (1950–1988)

Plastic – a threat to generations

Plastic is extensively used in our routine life. Starting from a pen to a polythene bag in which we carry vegetables or grocery are different forms of plastic. Using plastic is very convenient in our day to day use, however it has posed an alarming danger not only to the environment but also to the human life. Plastic is non-biodegradable and do not decay and remain mostly in the same state as we throw them. They may break down, but only into smaller pieces, which is even more dangerous. The pollution because of the usage of plastic and more specifically because of the single use plastic is devastating, huge and not known to many.

Plastic pollution is the introduction of plastic products in the environment which negatively impact the wildlife, humans, and other living organisms in different ways. These pollutants cause environmental degradation and also affect different living creatures & their habitats harmfully. The common reasons of plastic pollution include extensive use of plastic toys, plastic bags from shopping, plastic utensils/containers in kitchen, use of plastic disposables and bottles, etc. The other reasons for plastic pollution include the non-disposal of the plastic waste appropriately and failure to re-cycle the same for human good.

Nowadays, the Government is also spreading awareness for reducing the use of plastic and especially single use plastic through different ways. In many cities the government authorities are using the plastic waste for laying of roads, footpaths, etc. Many times, various fines were imposed at different places for use of plastic bags and polythene, which has also resulted in the reduction of the plastic pollution.

Even knowing the numerous ill effects of plastic pollution to human health & life, still nothing concrete has been done to reduce it. But now is the high time, when we have to join hands and put collective wide-ranging efforts to 'END PLASTIC POLLUTION' by killing it from the root or it will soon kill the ecosystem. Here are some very simple steps which can be taken by each of us on daily basis, to contribute towards lessening the use of plastic and help in improving the environment for the generations to come.

Here is the daily dose for a week towards reducing plastic pollution:

1. Use cloth Bags for shopping:

Next time when you visit the grocery store or vegetable market, remember to carry your own cloth bag that is large enough & reusable. Also guide the store person/vendor not to use polythene. Using bags made of cloth/paper is a smart way to reduce plastic pollution and we all can contribute with this little step in daily life to conserve the environment.

2. Carry your own non-plastic water bottle:

Plastic water bottles are extensively used by all of us throughout the day. Most of these are only recommended for single use, which means that every time someone finishes a bottle, it goes into the trash. Make a routine of using non-plastic water bottle for drinking water while going to office, school or on a holiday. If unavoidable, take a big plastic water bottle, so atleast the number of empty plastic bottles in the environment will reduce.

3. Say no to plastic containers in kitchen:

Kitchen is a place where the maximum plastic products are used on routine basis. From milk pouch to lunch boxes or containers, the use of plastic is very common in every house. We should switch to steel utensils and start recycling the old plastic containers from today. Regular steps should be taken by everyone to discard the kitchen plastic and decide not to buy further items/containers of plastic. Glass bottles/jugs or good quality steel bottles can be used at home. Using plastic containers in hot case at office is also hazardous to health and must be avoided by all.

4. Don't use plastic disposables:

We can reduce plastic pollution by using alternatives to plastics. We can actually stop using plastic bags and disposable utensils. Disposables plastic spoons, plates, straws, forks are very commonly used in every party or function at home.

Now, the plastic disposables are replaced with wooden/wooden type products in the market and we should use the same for functions. For promoting the use of steel and to discontinue plastic usage, many NGOs are providing free of cost steel plates and started service like "Bartan Bank" or "Free Bartan Seva" for parties and functions. One can use and give them back the clean plates.

5. Use reusable plastic, if required:

In case it is unavoidable to get away with plastic, one should use the reusable plastic only, instead of single use plastic like single use razors, straws, spoons, plates and bottles etc. This will help in reducing the plastic waste to a large extent. Plan not to buy single use plastic from today.

6. Segregate your plastic waste:

Another small step each one can do is to just segregate the plastic waste in a separate bin at home or office. In case proper disposal of the plastic waste is not done, even children are exposed to the same and can ingest plastic materials which are carelessly disposed of and this can result in choking. Check everything before you put it in the trash, as more and more items can be recycled these days.

7. Educate others:

The last but not the least and the most important step is to 'educate one and educate all' regarding the ill effects of using plastic and the ways how each one can contribute for 'discontinuing the use of plastic'. If all of us will educate our kids at home and teams at office, it will result in ripple effect and the objective can be achieved collectively, in an easy way. Educate others by sharing this article to as many people as you can.

Dinesh Garg
Manager (CS)
REC-Corporate Office, New Delhi

राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा हिंदी के देशव्यापी प्रचार–प्रसार और 'ग' क्षेत्र में विशेष रूप से हिंदी संबंधी आयोजनों की प्राथमिकताओं को साकार रूप देते हुए आरईसी निगमित मुख्यालय और आरईसी के तिरुवनंतपुरम स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के संयुक्त प्रयासों से तिरुवनंतपुरम में दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में आरईसी के देश भर में स्थित विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

दो दिनों तक चलने वाले इस सम्मेलन में पहले दिन 'हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग और 'ग' क्षेत्र में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति पर चर्चा की गई। दूसरे दिन कार्यालय में होने वाले काम–काज को हिंदी में करने के लिए अभ्यास आधारित प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया गया। प्रत्येक सत्र के अंत में संवादात्मक चर्चाएँ भी शामिल थीं।

हिंदी पखवाड़ा

निगम में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए 14 सितंबर से 28 सितंबर 2019 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री का हिंदी संदेश और केंद्रीय विद्युत राज्य मंत्री की हिंदी अपील सभी कार्मिकों के समक्ष पढ़ी गई। इस दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम 2019 के प्रावधानों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता, हिंदी नारा लेखन, हिंदी शब्द ज्ञान, हिंदी पैराग्राफ लेखन और हिंदी क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस दौरान विशेष अतिथि के रूप में विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) को भी आमंत्रित किया गया था।

हिंदी प्रतियोगिताओं के साथ–साथ कार्यालय में होने वाले काम–काज से संबंधित विषयों पर टिप्पण एवं आलेखन के अभ्यास के लिए विशेष प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन भी किया गया।

50वां स्थापना

आर ई सी
REC
INSPIRING FUTURE

REC
CELEBRATING
YEARS
1969-2019
GLORIOUS PAST, INSPIRING FUTURE

दिवस

आरईसी
REC
GOLDEN JUBILEE CELEBRATIONS

REC
Golden Jubilee
GOLDEN

योग एवं स्वास्थ्य शिविर

कार्मिक प्रशिक्षण

आरईसी के कार्मिकों के लिए एएससीआई, हैदराबाद में आयोजित प्रबंधन विकास कार्यक्रम

कर्मचारी यूनियन के साथ वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक

सेवानिवृत्त/पृथक/रिपैट्रिएट होने वाले अधिकारी और कर्मचारी (01 जनवरी 2019 से 31 अगस्त, 2019)

नाम/ श्री/ सुश्री/ श्रीमती/डॉ.	पदनाम	तैनाती का स्थान	सेवानिवृत्ति/ पृथक/ रिपैट्रिएट होने तारीख	कारण
डॉ. पी. शकील अहमद, आईएएस	वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक एवं ओएसडी	कारपोरेट कार्यालय	17.06.2019	मूल संवर्ग में रिपैट्रिएट किए गए
पी. के. मुखोपाध्याय	महाप्रबंधक (आईटी)	कारपोरेट कार्यालय	31.07.2019	सेवानिवृत्ति
सी. पी. भाटिया	महाप्रबंधक (वित्त)	कारपोरेट कार्यालय	07.08.2019	त्यागपत्र (लियन पर)
डॉ. पी. श्रीनिवास सुब्रह्मण्यम	अपर महाप्रबंधक	क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा	22.02.2019	रिपैट्रिएटेड
बी.पी. धवन	प्रबंधक (मानव संसाधन)	कारपोरेट कार्यालय	28.02.2019	सेवानिवृत्ति
सलीम	प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, पंचकुला	30.04.2019	सेवानिवृत्ति
के.ई. राजनकुट्टी	प्रबंधक (वित्त)	क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	30.04.2019	सेवानिवृत्ति
अशोक कुमार पाठक	प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय,जयपुर	31.07.2019	सेवानिवृत्ति
राज कुमार	प्रबंधक (वित्त)	कारपोरेट कार्यालय	31.07.2019	सेवानिवृत्ति
रवि कुमार सूदन	उप प्रबंधक (वित्त)	क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल	31.08.2019	सेवानिवृत्ति
रघुनन सी. पी.	उप प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	31.01.2019	सेवानिवृत्ति
आर.के. सिंह	उप प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, पटना	31.03.2019	सेवानिवृत्ति
श्रीमती सुनीता सहाय	उप प्रबंधक (मानव संसाधन)	कारपोरेट कार्यालय	30.04.2019	सेवानिवृत्ति
पवन कुमार	उप प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, पंचकुला	30.04.2019	सेवानिवृत्ति
पी.एस. कुंडू	सहायक प्रबंधक (वित्त)	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	31.01.2019	सेवानिवृत्ति
प्रोजीत कुमार डे	सहायक प्रबंधक (वित्त)	क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	31.03.2019	सेवानिवृत्ति
एवीआर कृष्णा राजू	सहायक प्रबंधक (वित्त)	क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद, हैदराबाद	30.04.2019	सेवानिवृत्ति

अशोक कुमार	सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन)	कारपोरेट कार्यालय	31.08.2019	सेवानिवृत्ति
मारिया परेरा	सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल	31.08.2019	सेवानिवृत्ति
नन्द किशोर कोहली	वरि. कार्यपालक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	28.02.2019	सेवानिवृत्ति
कृपा राम	वरि. कार्यपालक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ	31.07.2019	सेवानिवृत्ति
नीलम मल्होत्रा	वरि. कार्यपालक (मानव संसाधन)	कारपोरेट कार्यालय	31.07.2019	सेवानिवृत्ति
एस. श्रीधर	वरि. कार्यपालक (एलआईए)	आरईसीआईपीएमटी, हैदराबाद	31.08.2019	सेवानिवृत्ति
खेम चंद	कार्यपालक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला	28.02.2019	सेवानिवृत्ति
जी. आर. राव	कार्यपालक (मानव संसाधन)	आरईसीआईपीएमटी, हैदराबाद	28.02.2019	सेवानिवृत्ति
डी.एम. खरबदन	कार्यपालक (मानव संसाधन)	क्षेत्रीय कार्यालय, शिलांग	30.04.2019	सेवानिवृत्ति
अव्हाद संकेत भगवान	सहायक कार्यपालक (मानव संसाधन)	कारपोरेट कार्यालय	23..06.2019	त्यागपत्र
डी.एन. दास	वरिष्ठ सहायक	क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	31.08.2019	सेवानिवृत्ति
एम.आर. साई	वरिष्ठ सहायक	आरईसीआईपीएमटी, हैदराबाद	31.01.2019	सेवानिवृत्ति
आर. रविचंद्रन	वरिष्ठ सहायक	क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई	31.01.2019	सेवानिवृत्ति
बलबीर सिंह	डीएमओ (एसजी)	कारपोरेट कार्यालय	31.05.2019	सेवानिवृत्ति
प्रकाश चंद	डीएमओ (एसजी)	क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	30.06.2019	सेवानिवृत्ति
एस. एन. बनर्जी	डीएमओ (एसजी)	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	31.01.2019	सेवानिवृत्ति
मुरली	डीएमओ (एसजी)	क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ	31.03.2019	सेवानिवृत्ति
कृष्णा मुखर्जी	प्यून ग्रेड–I	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	31.03.2019	सेवानिवृत्ति

श्रद्धांजलि

आरईसी कारपोरेट कार्यालय में कार्यरत स्व. मीना भटनागर, वरिष्ठ कार्यपालक (मानव संसाधन) एवं स्व. के. मुरुगेशन, डीएमओ (एस.जी.) तथा आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में कार्यरत स्व. डी. के. मेहरोत्रा, उप प्रबंधक (वित्त) एवं स्व. जी.एस. यादव, सहायक प्रबंधक (वित्त) के असामयिक निधन पर पूरे आरईसी परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

गुरुग्राम में निर्माणाधीन आरईसी के वैश्विक मुख्यालय का निरीक्षण एवं वृक्षारोपण

क्रिकेट टूर्नामेंट

अन्य स्पोर्टस इवेंट्स

कारोबार

वित्त वर्ष 2018–19 के लिए विद्युत मंत्रालय को अंतरिम लाभांश ₹1,143.34 करोड़ का भुगतान

वित्त वर्ष 2019–20 के लिए आरईसी और पीएफसी के बीच एमओयू का आदान–प्रदान

पुरस्कार

इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) से 'पीएसई एक्सीलेंस अवार्ड 2018' प्राप्त करते हुए श्री अजीत अग्रवाल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, आरईसी तथा श्री जे. एस. अमिताभ, कार्यकारी निदेशक एवं कंपनी सचिव, आरईसी

स्वच्छ भारत कोश में योगदान के लिए 06 सितंबर, 2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में माननीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत से स्वच्छ भारत पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अजय चौधरी, कार्यकारी निदेशक (वित्त) आरईसी एवं श्री एस. एन. श्रीनिवास, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आरईसी फाउंडेशन

कारपोरेट कम्युनिकेशंस के लिए स्कोप पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सौरभ रस्तोगी, महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

आरईसी के 50 वर्ष

1969-2019

गौरवमयी अतीत, उज्ज्वल भविष्य

निरंतर

बेहतर एवं समृद्ध भविष्य की ओर अग्रसर

#RECturns50

प्रचुर ऊर्जा से सतत ऊर्जा की ओर – बेहतर भविष्य के लिए वित्तपोषण

आरईसी लिमिटेड (पूर्व में रुरल इलेक्ट्रीफिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड) **25 जुलाई 1969 से** अपनी अभिनव एवं विशिष्ट वित्तीय सेवाओं के माध्यम से कृषि उत्पादकता के विकास, औद्योगिक विकास के संवर्धन तथा घरों को रोशन करने और लोगों के सपनों को साकार करने का काम कर रहा है। आज आरईसी, प्रचुर ऊर्जा और सतत भविष्य के निर्माण की ओर तीव्र गति से अग्रसर है।

पूरे भारत में विद्युत उत्पादन, पारेषण, वितरण और हरित ऊर्जा से संबंधित परियोजनाओं के प्रोत्साहन एवं वित्तपोषण में भागीदार

Scan to know more

आरईसी REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड
(पूर्व में रुरल इलेक्ट्रीफिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड)
भारत सरकार का उद्यम

पंजीकृत कार्यालय: कोर-4, स्कोप कांप्लेक्स, 7, लोदी रोड़, नई दिल्ली-110 003, फोन: 91-11-4309 1500, फैक्स: +91-11-2436 0644
वेबसाइट: www.recindia.com सीआईएन: L40101DL1969GOI005095, जीएसटी नं. 07AAACR4512R1Z3

REC Limited | @OfficialREC | @reclimited | REC Limited

Scan to know more

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम)
(पूर्व में रुरल इलेक्ट्रीफिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड)

कोर 4, स्कोप कांप्लेक्स, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
फोनः 011-43091500, वेबसाइटः www.recindia.com